

डॉ. नट हेम, नीतिवचन, व्याख्यान 7

वैयक्तिकृत बुद्धि भाग 2

© 2024 नॉट हेम और टेड हिल्डेब्रांट

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. नट हेम हैं। यह सत्र संख्या सात, रूपक और व्यक्त ज्ञान भाग दो है।

नीतिवचन की बाइबिल पुस्तक पर व्याख्यान सात में आपका स्वागत है।

इस व्याख्यान में, हम रूपक सिद्धांत, आधुनिक रूपक सिद्धांत के हमारे अन्वेषण के दूसरे भाग को देखेंगे। और हम नीतिवचन की पुस्तक में कई अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों को भी देखेंगे जिनमें बुद्धि का मानवीकरण किया गया है। तो आइए मैं रूपक सिद्धांत पर भाग एक से शुरुआत करता हूँ।

और मैं वास्तव में उस तरह की कुछ और महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि की खोज के साथ शुरुआत करना चाहता हूँ जो 2008 में प्रकाशित मेटाफॉर एंड थॉट के तीसरे संस्करण में प्रस्तुत की गई थी, जिसे अब कैम्ब्रिज हैंडबुक ऑफ मेटाफॉर एंड थॉट का नाम दिया गया है। और यदि आप रूपक सिद्धांत में रुचि रखते हैं, तो यह एक शानदार खंड है। यह सस्ता नहीं है, लेकिन वास्तव में अत्याधुनिक या आधुनिक रूपक सिद्धांत के अत्याधुनिक किनारे का पता लगाने के लिए यह हर पैसे के लायक है।

इसने एक विशाल प्रतिमान बदलाव का संकेत दिया और इसे रेमंड गिब्स द्वारा संपादित किया गया, जिन्होंने सही ही दावा किया कि यह अब तक प्रकाशित बहु-विषयक रूपक छात्रवृत्ति में निबंधों का सबसे व्यापक संग्रह है। गिब्स ने कहा कि अब कई शैक्षणिक विषयों से अनुभवजन्य कार्यों का एक विशाल समूह है जो रोजमर्रा की भाषा और विशेष भाषा दोनों में, अमूर्त विचार और लोगों के भावनात्मक अनुभवों में रूपक की सर्वव्यापकता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है। अब हम मानवीय संज्ञान, संचार और संस्कृति में रूपक द्वारा किए गए आवश्यक योगदान का अधिक पूर्ण और अधिक यथार्थवादी वर्णन करने की स्थिति में हैं।

विशेष रूप से, रूपक के अनुभवजन्य अध्ययन से मन और अर्थ के सिद्धांत के लिए इसके महत्व का पता चलता है, जो रोजमर्रा की जिंदगी में रूपक विचारों की प्रमुखता को दर्शाता है। गिब्स ने उल्लेख किया, उद्घरण, बुनियादी और व्यावहारिक छात्रवृत्ति के बीच अद्भुत बातचीत, जैसे कि वास्तविक दुनिया के संदर्भों में रूपकों को नियोजित करने के तरीके पर निष्कर्ष, रूपक के सामान्य सिद्धांतों पर महत्वपूर्ण बाधाएं पेश करते हैं, अंत उद्घरण। अब इस बात पर आम सहमति बढ़ रही है कि रूपक मानव अनुभूति और संचार की बड़ी प्रणाली का एक आवश्यक घटक प्रदान करता है, जिससे लगातार बढ़ते सबूतों द्वारा समर्थित दृढ़ विश्वास बढ़ रहा है कि मौखिक और गैर-मौखिक रूपक को उत्पन्न करने के लिए असाधारण मानवीय प्रयास की आवश्यकता नहीं होती है और समझा।

मैं फिर से गिब्स से उद्धृत करता हूँ, रूपक मस्तिष्क, शरीर, भाषाओं और संस्कृति की बातचीत से उत्पन्न होता है, अंत उद्धरण, और हावभाव, कला और संगीत सहित मानव अनुभव के अन्य क्षेत्रों में प्रचलित है। यह, निश्चित रूप से, रूपक पर पारंपरिक प्रतिबिंब के विपरीत है, जिसमें क्रमशः 1979 और 1993 में प्रकाशित रूपक और विचार के पहले संस्करण और दूसरे संस्करण का अधिकांश भाग शामिल है, जो इस बात पर केंद्रित है कि लोगों ने अंतर्निहित रूपक के साथ उपन्यास रूपक भाषा को कैसे समझा। यह धारणा कि इन काव्य आकृतियों के निर्माण का श्रेय महत्वपूर्ण कलात्मक प्रतिभा वाले विशेष व्यक्तियों को दिया गया था, जैसा कि गिब्स बताते हैं। प्राकृतिक संदर्भों में वास्तविक मनुष्यों द्वारा रूपकों का उपयोग कैसे किया जाता है, इस पर ध्यान देने से पता चलता है कि गिब्स रूपक के विरोधाभास को क्या कहते हैं, अर्थात् रूपक एक साथ सामान्य और शानदार होते हैं।

उसे फिर से उद्धृत करने के लिए, रूपक रचनात्मक, उपन्यास, सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील है, और हमें सभी लोगों के लिए सामान्य शारीरिक अनुभव के व्यापक पैटर्न में निहित होने के साथ-साथ सांसारिकता से परे जाने की अनुमति देता है, अंत उद्धरण। रूपक में कल्पना को, हमारी कल्पना को नया आकार देने की शक्ति है। इसमें समझ के नए तरीके बनाने की क्षमता है, अक्सर विशेष सौंदर्य सुख के साथ, जबकि रचनात्मक काव्य रूपक एक ही समय में रूपक विचार की स्थायी योजनाओं का विस्तार हो सकते हैं और जरूरी नहीं कि इन्हें नए सिरे से बनाया जाए।

अनुसंधान जो वैचारिक पर ध्यान केंद्रित करता है और रूपक विचार के लिए आधार तैयार करता है, वह रूपक के बारे में एक साथ सामान्य और शानदार चीज़ों के बीच संबंध बना सकता है। फिर, इन नए निष्कर्षों ने हमें आगे बढ़ाया है और रूपक अध्ययन में एक रोमांचक अंतःविषय चरण में ला दिया है। अब मैं आधुनिक रूपक सिद्धांत का पता लगाना चाहता हूँ और प्रतीक्षा करें, रूपक के बारे में बातचीत की रूपक-रूपक प्रकृति।

तो, रूपक के बारे में सोचने और समझने के लिए एक जटिल चीज़ है। इसलिए, विडंबना यह है कि रूपकों को बेहतर ढंग से समझने के लिए, हमें रूपकों को समझने के लिए रूपक भाषा का उपयोग कम या समृद्ध करना पड़ता है। ये रहा।

रूपकों के बारे में रूपक संबंधी बातचीत या मेटा-रूपक बातचीत का एक आम तौर पर नकारात्मक उदाहरण, अत्यधिक सम्मानित बाइबिल विद्वान जीबी केयर्ड द्वारा रूपकों का एक प्रसिद्ध वर्णन है। 1980 से बाइबिल की भाषा और कल्पना में इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। और आप ध्यान दें, निश्चित रूप से, यह लेकहॉफ से पहले का है।

केयर्ड लेंस की सादृश्यता का उपयोग करके रूपक के महत्व पर जोर देते हैं। और मुझे कहना चाहिए कि यह सादृश्य बाइबिल के अध्ययनों में व्यापक रूप से प्रभावशाली रहा है, लेकिन मुझे लगता है कि दुख की बात है कि रूपक वास्तव में कैसे काम करते हैं, इसकी हमारी सराहना के लिए यह बहुत हानिकारक रहा है। लेकिन यहाँ केयर्ड का सूत्रीकरण है।

मैं उद्धृत करता हूँ, कि जब हम किसी वस्तु को लेंस के माध्यम से देखते हैं, तो हम वस्तु पर ध्यान केंद्रित करते हैं और लेंस को अनदेखा कर देते हैं। रूपक एक लेंस है। ऐसा लगता है मानो वक्ता कह रहा हो, इसे देखो और देखो कि मैंने क्या देखा है।

ऐसा कुछ जिसे आपने लेंस के बिना कभी नोटिस नहीं किया होगा। रूपक क्या है, इसकी यह रूपक व्याख्या, अपनी सुंदरता में सम्मोहक और अपनी अस्पष्टता में भयावह रूप से भ्रामक है। यह एक विशेष रूप से वाक्पटु सूत्रीकरण है, लेकिन यह गलत है।

यह इस बात से सूचित होता है कि अब अक्सर इसे रूपक के अलंकार सिद्धांत के रूप में संदर्भित किया जाता है या अब किया जा रहा है। जबकि केयर्ड सही ढंग से इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि रूपक देखने का एक अनूठा तरीका सक्षम करते हैं, रूपक के माध्यम से व्यक्त की गई अवधारणा जो रूपक के बिना असंभव होगी, रूपक की प्रकृति और कार्य को समझाने के लिए उनके रूपक की बहुत खुशी विडंबनापूर्ण रूप से भ्रामक है। उनका कहना है कि जब हम किसी वस्तु को लेंस के माध्यम से देखते हैं, तो हम वस्तु पर ध्यान केंद्रित करते हैं और लेंस को नजरअंदाज कर देते हैं।

फिर भी, यह कथन, इसे देखें और कुछ ऐसा देखें जिसे आपने लेंस के बिना कभी नहीं देखा होगा, यह दर्शाता है कि रूपक अभिव्यक्ति स्वयं संज्ञानात्मक प्रक्रिया के लिए अपरिहार्य और आवश्यक है। केयर्ड का मेटा-रूपक कई अन्य कारणों से भी भ्रामक है। सबसे पहले, रूपक का उपयोग आम तौर पर किसी ऐसी चीज़ का वर्णन करने के लिए नहीं किया जाता है जिसे किसी ने पहले कभी नहीं देखा है, बल्कि उस चीज़ का वर्णन करने के लिए किया जाता है जो ज्ञात है लेकिन अच्छी तरह से समझा नहीं गया है।

दूसरा, अधिकांश लेंस जो इस उद्देश्य के लिए उपयोगी होते हैं वे आवर्धन के अलावा और कुछ नहीं करते हैं। और इसलिए यह हमें केवल वही देखने में मदद करता है जो हम इसके बिना पहले ही देख चुके हैं, केवल बड़ा। हाँ, हम वस्तु के छोटे हिस्से देख सकते हैं जो प्राकृतिक दृष्टि से अदृश्य हैं, लेकिन बस इतना ही।

और यहां तक कि जब एक लेंस वास्तव में हमें कुछ अलग देखने में मदद करता है, तो यह आवश्यक है कि एक दोषपूर्ण लेंस उस वस्तु को विकृत कर दे जिस पर हम विचार कर रहे हैं। इसलिए, मैं इस बात पर प्रकाश डालना चाहता हूँ कि जो व्यक्त किया जा रहा है उसके अर्थ और रूपक के उपयोग के माध्यम से की जाने वाली सोच दोनों के लिए रूपक अभिव्यक्ति बिल्कुल आवश्यक है। और मैं इस रूपक को अपने आप में रूपक अभिव्यक्तियों का आंतरिक और अपरिहार्य मूल्य कहता हूँ, केयर्ड के बयानों के विपरीत, जिन्हें हमने अभी देखा है।

इसके विपरीत, मेरा सुझाव है कि जो संप्रेषित किया जा रहा है उसमें इसके योगदान की पूरी सराहना पाने के लिए हमें रूपक अभिव्यक्ति के साथ ही बने रहने की आवश्यकता है। और एक तरह से मैंने ज्ञान के मानवीकरण के साथ अपने जुड़ाव के पहले भाग में इसे प्रदर्शित करने का प्रयास किया है, विशेष रूप से ज्ञान प्राप्त करने के रूपक के संबंध में जैसा कि हमने पहले

इसका पता लगाया था। बदले में, मैं वास्तव में रूपक संचार की प्रक्रिया को समझाने के लिए एक मेटा-रूपक का उपयोग करना चाहता हूँ।

विचार यह है कि एक रूपक अभिव्यक्ति, इसके लिए प्रतीक्षा करें, विचार की ट्रेन है। और क्या आपने देखा कि मैं वास्तव में एक मेटा-रूपक का उपयोग कैसे कर रहा हूँ जो पहले से ही अंग्रेजी भाषा में मौजूद है? हम विचारों की एक श्रृंखला का अनुसरण करते हैं, हम विचारों की एक श्रृंखला का अनुसरण करते हैं, हम विचारों की एक श्रृंखला का मनोरंजन करते हैं, इत्यादि। हम उस अभिव्यक्ति का नियमित रूप से उपयोग करते हैं, ठीक इसलिए ताकि हमें सोचने में मदद मिल सके।

रूपकों की तुलना स्पष्ट रूप से मृत रूपक को पुनर्जीवित करने वाली विचार श्रृंखला से की जा सकती है। यह बिल्कुल भी मरा नहीं है। यह वास्तव में सदैव उपयोगी रहा है।

वे मन के यात्री को बोर्ड पर आने और कल्पना की यात्रा करने के लिए आमंत्रित करते हैं। क्या आप देखते हैं कि विचार की एक श्रृंखला के रूप में रूपक के इस व्यवस्थित विचार से अन्य रूपकों की एक पूरी प्रणाली कैसे जुड़ी हुई है? तो हम कल्पना की यात्रा पर हैं जहां रूपक से जुड़े सामान्य स्थान वास्तव में सड़क के किनारे के स्थल हैं। विचार की एक ट्रेन के रूप में रूपक हमें खोज की यात्रा पर ले जाता है जिसके दौरान रूपक द्वारा व्यक्त इकाई के प्रति हमारी धारणा और जुड़ाव बढ़ता है।

मेरे साथ आइए। चिंतन का उद्देश्य जिसे हम रूपक के माध्यम से समझने की आशा करते हैं वह यात्रा का अंत है, हमारी विचार यात्रा का गंतव्य है। वैसे, हमने जो टिकट चुना है, वह वापसी टिकट है।

हम विचार की ट्रेन के अंतिम गंतव्य तक यात्रा कर सकते हैं और फिर वापस आ सकते हैं। हालाँकि, यात्रा करने की शक्ति के साथ अतिरिक्त जिम्मेदारी भी आती है। हमारे विचारों की चुनी हुई ट्रेन हमें एक प्रक्षेप पथ पर ले जाती है, एक ट्रेक जो हमारे द्वारा चुने गए वाहन की प्रकृति से पूर्व निर्धारित होता है।

एक और रूपक. यह ट्रेन हमें केवल इतनी दूर ले जाएगी और एक समय ऐसा भी आ सकता है जब स्थलचिह्न अपरिचित हो जाएंगे, उनसे जुड़े सामान्य स्थान नहीं रह जाएंगे। एक समय ऐसा आएगा जब ट्रेन में बैठे रहना हमें अपने लक्ष्य को समझने के बजाय उसके करीब ले जाएगा।

हम बहुत देर तक ट्रेन में रुके रहे। हम अपना निकास स्टेशन चूक गए हैं। आखिरकार, हमें एहसास हुआ कि ट्रेन से उतरने का समय हो गया है।

यह रूपक, जिस वाहन को हमने चुना है, वह दूरी के लिए सही है, जो हमें समझ की मंजिल के करीब लाता है। लेकिन अब बदलाव का समय आ गया है। यह रूपक हमें एक मानसिक रिले स्टेशन पर ले आया है जहां हम एक अलग वाहन पकड़ सकते हैं।

चाहे वह कोई अन्य रेल लाइन हो, वह कोई अन्य रूपक हो, या कोई प्रतिस्थापन बस हो, वह एक उपमा हो, एक टैक्सी हो, वह एक रूपक हो, या एक किराये की कार हो, वह एक पर्यायवाची होगी। यह हमें और भी करीब लाएगा। ध्यान दें कि मेरे मेटा-रूपक में सभी वाहन सार्वजनिक परिवहन के साधन हैं, इस बात पर ज़ोर देने का एक सचेत विकल्प कि रूपक एक सामान्य वस्तु हैं।

हालाँकि, अंत में, यह यात्रा के उस हिस्से पर भी विचार करने लायक है जहाँ हम अनिश्चित हो गए थे कि क्या हमें उसी ट्रेन पर चलते रहना चाहिए या बदलाव करना चाहिए। हम किसी भी बिंदु पर उतर सकते हैं, लेकिन जितनी जल्दी हम ऐसा करेंगे, हम उतना ही कम आश्वस्त होंगे कि हम अपने लक्ष्य के उतने करीब आ गए हैं या नहीं जितना कि यह ट्रेन वास्तव में हमें ले जा सकती है। इस प्रकार, मुझे ऐसा लगता है कि लंबे समय तक बने रहना सार्थक है और वास्तव में हमारी समझ की सीमाओं को आगे बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण है।

केवल परिचित स्थलों, सामान्य स्थानों, जिन्हें हर कोई पहचानता है, से आगे जाकर ही हम तुरंत वास्तविक नई अंतर्दृष्टि तक पहुंचने में सक्षम होंगे। यह एक जीत की स्थिति है, यहां तक कि जब हमारी ट्रेन हमें उस जगह से आगे ले जाती है जहां हम जाना चाहते थे, तो हम, यहां ट्रेनों के साथ रूपक सादृश्य थोड़ा टूट जाता है, रूपक विचार यात्रा की काल्पनिक दुनिया में, तुरंत उतर सकते हैं। हमारे पास एक वापसी टिकट है, याद रखें, और सीधे वापस कूदकर अपनी यात्रा को दोहराएँ जहाँ अब हम जानते हैं कि हमें पहले स्थान पर उतरना चाहिए था और हमें अपने गंतव्य के करीब लाने के लिए रूपक परिवहन के दूसरे साधन पर चढ़ना चाहिए।

रूपक के महत्व को समझाने के लिए विचार की एक श्रृंखला का मेरा रूपक है। पारंपरिक रूपक सिद्धांतों और उसके अनुप्रयोगों में, केहर के उदाहरण में लेंस की तरह, रूपक अपरिहार्य थे। केवल वहाँ, अलंकरण के लिए, किसी चीज़ को थोड़ा अधिक दिलचस्प बनाना, लेकिन वास्तव में जितनी जल्दी हो सके छुटकारा पाना।

रूपक सिद्धांत की नई समझ में, रूपक अभिव्यक्ति मानसिक और संज्ञानात्मक प्रगति के लिए आवश्यक है, और यह बिल्कुल सही भी है। और इसलिए, जैसा कि मैं व्याख्यान 7 के दूसरे भाग में खोजूंगा जब हम ज्ञान मानवीकरण के बारे में आगे के पाठों को देखेंगे, हम वास्तव में मानवीकरण रूपक के साथ बने रहने और बने रहने का प्रयास करेंगे ताकि हमें ज्ञान और बौद्धिक प्रक्रिया को समझने में मदद मिल सके। हाल तक की तुलना में कहीं अधिक गहरे स्तर पर बुद्धिमान बनना संभव हो सका है। व्याख्यान 7 के दूसरे भाग में, अब हम नीतिवचन की पुस्तक में प्रमुख मानवीकरण ग्रंथों के आगे पढ़ने के लिए रूपक सिद्धांत में प्राप्त की गई अंतर्दृष्टि को लागू करेंगे।

हम सबसे पहले अध्याय 7, श्लोक 4 से 5 की ओर मुड़ते हैं, और तर्कों का पालन करने में हमारी मदद करने के लिए, मैं आपके लिए केवल उन दो श्लोकों को पढ़ूंगा। बुद्धि से कह, तू मेरी बहिन है, और बुद्धि को अपनी घनिष्ठ सखी कह, कि वह तुझे छिनाल स्त्री से, और चिकनी चुपड़ी बातों से व्यभिचारिणी से बचाए रखे। यहां बुद्धि को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है, लेकिन श्लोक 4 से 5 में अनिवार्यता का श्लोक 1 से 3 में तीन पूर्ववर्ती अनिवार्यताओं के साथ मेल, अर्थात् पिता की

शिक्षाओं को बनाए रखना और बांधना, एक बार फिर सुझाव देता है कि यहां ज्ञान पिता की शिक्षा को व्यक्त करता है।

मानवीकरण केवल श्लोक 4 तक ही सीमित नहीं है, जिसमें कहा गया है, ज्ञान से कहो, तुम मेरी बहन हो, और अंतर्दृष्टि मित्र कहो, बल्कि श्लोक 5 में भी जारी है, हालांकि वहां प्रयुक्त क्रिया रूप, एक इनफिनिटिव, विशेष रूप से स्त्रीलिंग नहीं है। माइकल फॉक्स ने अपनी टिप्पणी में कविता के अर्थ का एक अच्छा सारांश प्रदान किया। मैं उद्धृत करता हूं, यह कविता ज्ञान की बात करती है जैसे कि वह एक व्यक्ति हो।

जैसे को अध्याय 8 से 9 के विपरीत शब्दों में बनाए रखा गया है, जहां ज्ञान को लगातार एक व्यक्ति के रूप में माना जाता है। यह कविता हमें एक व्यक्ति के रूप में ज्ञान से संबंधित होने के लिए कहती है, लेकिन यह उसे एक व्यक्ति के रूप में चित्रित नहीं करती है। तुलना का मुद्दा रिश्ते की प्रकृति ही है।

बहन, गीतों के गीत में, और वैसे मिस्र के प्रेम गीतों में, प्रिय के लिए प्रेम का एक शब्द है। इस अर्थ में, बहन शेष अध्याय में वर्णित नाजायज कामुक संबंधों के बिल्कुल विपरीत खड़ी होगी। फिर भी, बहन कामुक आकर्षण का संकेत दिए बिना अंतरंगता और स्नेह व्यक्त कर सकती है।

तो, गीतों के गीत में, और मिस्र के प्रेम गीतों में, बहन प्रियतम के लिए प्रेम का एक शब्द है। चूंकि कविता की दूसरी पंक्ति में मित्र का तात्पर्य पुरुष मित्र से भी हो सकता है, हालांकि, बहन का कामुक अर्थ अग्रभूमि में नहीं है। गीतों के गीत में, बहन शब्द चार बार आता है, 4:9, 10, और 12 में और 5:1 में भी, हर बार संयोजन में, मेरी बहन, मेरी दुल्हन, पुरुष के अपनी महिला प्रेमी को संबोधित करने के रूप में।

लेकिन जुड़वां शब्द दुल्हन नीतिवचन में प्रकट नहीं होता है, और इसलिए गीत में निहित कामुक अर्थ यहां और भी अधिक मौन है। बहन का मतलब केवल परिवार या खून का रिश्ता हो सकता है। लेकिन मर्फी ने अपनी टिप्पणी में सोचा कि, उद्धरण, भाषा स्पष्ट रूप से कामुक है, और यह मार्ग, अंत उद्धरण के अंतर्निहित प्रतीकवाद को उजागर करने के लिए पर्याप्त है।

फिर भी, जैसा कि हमने देखा है, गाने के बोल की तुलना में भाषा कम विशिष्ट रूप से कामुक है, और वहां भी इसका उल्लेख स्पष्ट रूप से करने के बजाय विचारोत्तेजक कविता के माध्यम से किया जाता है। जैसा कि फॉक्स ने कहा, बहन कामुक आकर्षण के बिना भी अंतरंगता और स्नेह व्यक्त कर सकती है। हालांकि, पूरे अध्याय के संदर्भ में, एक नाजुक रोमांटिक स्वर मौजूद है, कम से कम पृष्ठभूमि में।

यह अध्याय 7 के शेष भाग में हतोत्साहित की गई अजीब महिला के साथ नाजायज, खुले तौर पर कामुक संबंधों के लिए एक सकारात्मक विकल्प सुझाता है। फिर, साहित्यिक स्तर पर व्यक्तित्व स्पष्ट रूप से बना हुआ है। मानवीकरण के इस विशेष उदाहरण के लिए ज्ञान की स्त्रीत्व आवश्यक नहीं है। यह कविता हमें एक व्यक्ति के रूप में ज्ञान से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करती है, लेकिन यह उसे एक व्यक्ति के रूप में चित्रित नहीं करती है, जैसा कि फॉक्स ने सुझाव दिया था।

तुलना का मुद्दा रिश्ते की प्रकृति ही है। एक आदमी के साथ दोस्ती, एक बहन के लिए स्नेह, और रोमांटिक प्रेम, प्रत्येक अनुशासित रिश्ते को समान रूप से अच्छी तरह से व्यक्त कर सकते हैं। गौरतलब है कि ये मनुष्यों के बीच विशिष्ट समतावादी रिश्ते हैं।

यह अध्याय 1, छंद 22-33, अध्याय 8, 1-36 और अध्याय 9 से भिन्न है, जो मनुष्यों और उत्कृष्ट महिला ज्ञान के आकार में पूर्ण रूप से व्यक्त ज्ञान के बीच एक विषम संबंध को चित्रित करता है। धन्यवाद। अब हम नीतिवचन अध्याय 8 की ओर मुड़ते हैं। बेशक, यह 36 छंदों वाला एक बहुत लंबा अध्याय है, और यह सब एक बहुत विस्तारित और बहुत विस्तृत मानवीकरण में है।

इस शैली के व्याख्यान में, हम हर एक कविता पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सकते हैं, लेकिन मैं अध्याय के शुरुआती भाग पर कई टिप्पणियों पर प्रकाश डालूंगा, और फिर विशेष रूप से श्लोक 22, श्लोक 30 और श्लोक 32-36 पर अध्याय पर ध्यान केंद्रित करूंगा। यहां मेरी अधिकांश चर्चा अध्याय के साथ ब्रूस वाल्टके के उत्कृष्ट जुड़ाव के संबंध में बातचीत और अक्सर या तो पुष्टि या आलोचना में होगी। कभी-कभी मैं उनसे सहमत होता हूं, कभी-कभी मैं उनसे असहमत होता हूं।

मैंने उनके जुड़ाव से बहुत कुछ सीखा है, लेकिन अक्सर मुझे लगता है कि रूपक सिद्धांत के बारे में मेरी समझ मुझे वाल्टके के काम में जो देखा है उससे एक या दो कदम आगे ले जाती है। जैसे ही हम नीतिवचन 8 में ज्ञान के मानवीकरण की जांच की ओर मुड़ते हैं, तीन पहलू इसकी व्याख्या के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सबसे पहले, ज्ञान का मानवीकरण पिछले अध्यायों के मानवीकरण से भिन्न नहीं है।

अध्याय 1-7 में जो कुछ भी कहा गया है वह यहां प्रस्तुत किए गए वैयक्तिक ज्ञान की धारणा को दर्शाता है, और इसके विपरीत। दूसरा, नीतिवचन 8 में ज्ञान केवल छंद 22-31 में ही नहीं, बल्कि पूरे अध्याय में व्यक्त किया गया है, जिसने मानवीकृत ज्ञान के स्वागत के इतिहास में ऐसी असाधारण प्रमुख भूमिका निभाई है। इस प्रकार, जांच के लिए पूरे अध्याय की पृष्ठभूमि के विरुद्ध व्यक्तिगत ज्ञान का विश्लेषण करने की आवश्यकता है।

फिर भी, और यह तीसरा पहलू है, जिन कारणों से छंद 22-31 का इतना असाधारण समृद्ध स्वागत इतिहास हुआ है, उन्हें समग्र रूप से अध्याय की व्याख्या में और अमीरों के लिए इसके योगदान को स्पष्ट करने और गंभीरता से लेने की आवश्यकता है। समग्र रूप से नीतिवचन 1-9 में व्यक्त ज्ञान की टेपेस्ट्री। हमने पहले ही इसका उल्लेख किया है, नीतिवचन 8 में पूरी पुस्तक में ज्ञान का सबसे लंबा और सबसे शुभ अवतार शामिल है। व्यक्तिगत ज्ञान की आत्म-प्रशंसा के निकटतम औपचारिक समानताएं मेसोपोटामिया के भजन हैं जिनमें एक देवता पहले व्यक्ति में स्वयं की प्रशंसा करता है।

नीतिवचन 1-9 के व्यापक संदर्भ में, ज्ञान भाषण नीतिवचन 1 श्लोक 22-33 से मेल खाता है जैसा कि वाल्टके ने माना है। मैं उद्धृत करता हूं, शहर के द्वार पर ज्ञान का मानवीकरण प्रस्तावना पर अंतिम पेरिकोप के बगल में है जो शुरुआत से दूसरे में समानांतर मानवीकरण को संतुलित करता

है। ज्ञान द्वारा इन दोनों संबोधनों की सेटिंग, पते और शब्दावली समान हैं और उनके निष्कर्ष उन लोगों के भाग्य के विपरीत हैं जो उसे सुनते हैं और जो उसे अस्वीकार करते हैं वे भी समान हैं।

फिर भी, वाल्टके ने नीतिवचन 1 और नीतिवचन 8 में व्यक्त ज्ञान के रुख के बीच अंतर भी बताया। मैं उद्धृत करता हूँ, भोले-भाले लोगों को अपने पहले संबोधन में, उन्होंने मान लिया कि उन्होंने उसे पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया है ताकि वह अपनी बात कह सकें कि कोई दूसरा नहीं है फैसले के बाद मौका। लेकिन यहाँ, वह अभी भी उन पर ध्यान देने और नैतिक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने का अवसर खुला रखती है। वाल्टके 1-22-33 और 8-1-5 की अपनी व्याख्याओं के विरोधाभासों और विसंगतियों को साथ-साथ खड़ा होने देने से संतुष्ट दिखे।

इसके विपरीत, हमें यहां एक ऐसा उदाहरण मिलता है जहां ज्ञान के पहले के मानवीकरण को बाद के एक अंश के प्रकाश में फिर से पढ़ा जाना चाहिए। विशेष रूप से, फिर, निम्नलिखित नीतिवचन 1-20 में युवा पुरुषों के भाग्य की स्पष्ट अपरिवर्तनीयता को शाब्दिक रूप से नहीं लिया जाना चाहिए, बल्कि अलंकारिक प्रभाव के लिए अतिशयोक्ति के रूप में समझा जाना चाहिए। और अब मैं नीतिवचन 8 में ज्ञान भाषण की समग्र संरचना के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ। यह छंद 1-10 में एक परिचय के साथ सात भागों में आता है, वास्तव में दो भागों में, एक मुख्य पाठ, छंद 11-31 में, आता है छंद 32-36 में चार छोटे हिस्से और एक निष्कर्ष, अक्सर विद्वता में नजरअंदाज कर दिया जाता है।

ठीक है, पूरी तरह से नजरअंदाज नहीं किया गया है लेकिन इसे उतनी गंभीरता से नहीं लिया गया है जितना मुझे लगता है कि इसे लिया जाना चाहिए, जैसा कि मैं दिखाना चाहता हूँ। निम्नलिखित वाल्टके की रूपरेखा का एक छोटा सा रूपांतरण है, जिन्होंने बदले में अपनी टिप्पणी में रेमंड वैन लीउवेन के संरचनात्मक विश्लेषण को अपनाया और अनुकूलित किया। दरअसल, मैं अब ऐसा नहीं करूंगा क्योंकि यह काफी हद तक उस चीज़ की पुनरावृत्ति है जो मैंने पहले ही किया है, लेकिन वाल्टके के संरचनात्मक विश्लेषण पर फिर से ध्यान केंद्रित करूंगा, जो विशेष रूप से व्यक्तिगत ज्ञान भाषण के मुख्य भाग के संबंध में सहायक है।

मैं उद्धृत करता हूँ, विजडम ने अपने एनकोमियम को विकसित किया है, जो कि उसकी अत्यधिक उच्च आत्म-प्रशंसा है, दस छंदों के दो बराबर हिस्सों में। पहला ऐतिहासिक समय से संबंधित है, श्लोक 12-21, और दूसरा आदिकालीन समय से संबंधित है, श्लोक 22-31। पहले में बुद्धि के परामर्श, समझ और ताकत के संचारी गुण शामिल हैं, जो राजाओं को शासन करने में सक्षम बनाता है, और जो अपने प्रेमियों को धन और सम्मान प्रदान करता है।

दूसरा, शेष सृष्टि से पहले उसके दिव्य प्रजनन से संबंधित है, उसे स्पष्ट बड़प्पन, योग्यता और अधिकार प्रदान करता है, और जिस तरह से भगवान ने ब्रह्मांड का निर्माण किया, छंद 22-31 में, आबाद पृथ्वी का निर्माण किया, उससे उसकी प्रसन्नता से संबंधित है। आरंभिक छंद वक्ता के रूप में व्यक्तित्वपूर्ण ज्ञान का परिचय देते हैं, जो अध्याय के शेष भाग में कथनों को स्वर देता है। व्यक्तिगत ज्ञान के अद्वितीय चरित्र और स्थिति के बारे में इतने उल्लेखनीय कथन हैं कि संक्षिप्त सारांशों की एक सूची शायद डेटा प्रस्तुत करने का सबसे अच्छा तरीका हो सकती है।

पहला, श्लोक 1-4 में ज्ञान के स्थान और उसके श्रोता। वह खुद को शहर के अंदर मुख्य चौराहे और शहर के द्वारों पर रखती है, जहां से अंततः हर किसी को गुजरना पड़ता है, और जहां उसे यथासंभव अधिक से अधिक लोगों द्वारा सुना जा सकता है। उनकी अपील व्यावहारिक और मूर्त है, लेकिन साथ ही सार्वभौमिक है, जो न केवल शहर के नागरिकों को बल्कि आगंतुकों और यात्रियों, उनकी आवाज़ के दायरे में आने वाले सभी लोगों को आकर्षित करती है।

यह संभव है कि श्लोक 2 खुले देश की मुख्य सड़कों को संदर्भित करता है। अपेक्षा के विपरीत, मर्दाना बहुवचन संबोधन के बावजूद, ज्ञान की वाणी विशेष रूप से पुरुषों को संबोधित नहीं होती है। बहुवचन रूप नियमित फोनीशियन बहुवचन है, जैसा कि वाल्टके ने बताया है, लेकिन असामान्य भिन्नता की पसंद को सामान्य मर्दाना बहुवचन के रूप में समझा जाना चाहिए, जो सामान्य रूप से लोगों को संबोधित करता है।

यह व्याख्या दूसरी अर्ध-पंक्ति द्वारा समर्थित है, जहां अभिव्यक्ति, एडम के पुत्र, का अर्थ बड़े पैमाने पर मानवता, पुरुष और महिला, युवा और बूढ़े, अमीर और गरीब, इजरायली और विदेशी है। यह वाक्यांश श्लोक 31 में पुनः प्रकट होता है और इस प्रकार बुद्धि के भाषण को ढाँचा देता है। उसकी उत्पत्ति और स्थिति कितनी भी ऊँची क्यों न हो, बुद्धि लोगों की परवाह करती है, यहाँ तक कि कम योग्य लोगों की भी, और उनकी तलाश करती है।

यह कथन माइकल फॉक्स की टिप्पणी से लिया गया है। बुद्धि हर किसी के लिए अपना संदेश प्रस्तुत करती है, और वह इसे वहाँ प्रस्तुत करती है जहाँ प्रतिस्पर्धा सबसे कड़ी होती है, अन्य वक्ताओं से प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि व्यापार, राजनीति और विवादों की रोजमर्रा की गड़बड़ी से प्रतिस्पर्धा होती है। गूढ़ या अकादमिक होने से दूर, ज्ञान इस हलचल के बीच में उतरकर उन लोगों तक पहुंचता है जहाँ वे हैं, फिर से माइकल फॉक्स की टिप्पणी के शब्दों का उपयोग करते हुए।

इसी तरह का एक बयान वाल्टके की टिप्पणी में पाया जा सकता है। वह ऋषि जो सुलैमान की विरासत को प्रसारित करता है, वह किसी मठ में विद्वान या धार्मिक लोगों के गूढ़ मंडल में, या यहाँ तक कि विशेष रूप से अपने घर में नहीं रहता है। बल्कि, शायद द्वार पर एक बुजुर्ग के रूप में, वह बाज़ार में अपनी बात सुनाता है जहाँ लोगों के दिलों के लिए प्रतिस्पर्धा सबसे अधिक होती है।

मैं इससे सहमत हूँ, केवल मुझे लगता है कि वाल्टके ने खुद को यहाँ पुरुष-उन्मुख भाषा में फिसलने की अनुमति दी, जिससे पुरुष ऋषि के शब्दों में स्त्री ज्ञान के अवतार को कम और विकृत किया गया। फिर से, उन विशिष्ट त्रुटियों में से एक, मेरा मानना है, रूपक की पहले की समझ में जहाँ महिला व्यक्तित्व को जो कहा जा रहा है उसके अर्थ के लिए आकस्मिक माना जाता है। मेरे विचार से, यह परिस्थिति कि ज्ञान यहाँ महिलाओं सहित सभी को संबोधित करता है, पुस्तक के आरंभ से एक महत्वपूर्ण विकास का गठन करता है, जो विशेष रूप से पुरुषों को संबोधित करता है।

हालाँकि, नीतिवचन में निम्नलिखित अध्याय 10-31 में अधिकांश व्यावहारिक सलाह, हालाँकि सभी नहीं, पुरुष दर्शकों पर ध्यान केंद्रित करना जारी रखेंगी, पुस्तक में मानवकृत ज्ञान का केंद्रीय संबोधन सभी को संबोधित है। नीतिवचन 8.14-16 दो आधारों पर इसकी पुष्टि करता है। एक ओर, विभिन्न शक्तिशाली शिष्यताओं को निर्दिष्ट करने वाले शब्द केवल इस्राएलियों को ही नहीं, बल्कि सभी शासकों को शामिल करते हैं।

दूसरी ओर, जैसा कि वाल्टके ने कहा, ये शासक व्यक्तिगत ज्ञान की उदारता के विशेष लाभार्थी नहीं हैं। उसे उद्धृत करें, याद रखें कि वह सड़क पर आदमी को संबोधित करती है, कुछ विशिष्ट लोगों को नहीं। राजकुमारों को अपने सुशासन में कितनी सफलता मिलती है?

बुद्धि अपने सभी प्रेमियों से यथोचित परिवर्तनों का वादा करती है। अंत उद्धरण. इसलिए हमने केवल श्लोक 1-4 में विज्जम के स्थानों और उसके श्रोताओं को देखा है।

अब हम श्लोक 5-21 के शेष भाग को देखेंगे और यहां दूसरे बिंदु के रूप में बुद्धि के मूल्य से शुरुआत करेंगे। बुद्धि का मूल्य. नीतिवचन 8 में व्यक्त ज्ञान सुनने लायक है, क्योंकि उससे सीखना बेहद मूल्यवान है।

वह जो सिखाती है वह विश्वसनीय और नैतिक रूप से सही है, श्लोक 6-9। वह सबसे महंगे खजानों से भी अधिक मूल्यवान है, छंद 10-11, एक विषय नीतिवचन 3 में पहले से ही दर्शाया गया है। वाल्टके ने उचित टिप्पणी की है, मैं उद्धृत करता हूं, उसे अपने शब्दों के मूल्य पर जोर देना चाहिए, क्योंकि उसकी बिक्री कठिन है। उसके पास कहने के लिए कुछ कठिन बातें हैं और बताने के लिए कुछ असुविधाजनक सत्य हैं।

और वह आत्म-अनुशासन की बात करती है न कि आत्म-भोग की। जैसा कि अध्याय 7 में तर्क दिया गया है, बेवफा पत्नी की वाणी शुरुआत में मधुर और अंत में कड़वी होती है। बुद्धि की वाणी प्रारंभ में अनुशासन की मांग करती है और अंत में जीवन का वादा करती है।

अंत उद्धरण. नीतिवचन 8 में व्यक्त ज्ञान के भाषण को सुनने की प्रेरणा और, निहितार्थ से, नीतिवचन की पुस्तक में संपूर्ण शिक्षण, दुगना है। बुद्धि अपने आंतरिक मूल्यों और गुणों के कारण सुनने लायक है।

और वह सुनने लायक है क्योंकि उसकी शिक्षाओं का पालन करने से ठोस सामाजिक और वित्तीय लाभ मिलते हैं, जिससे जीवनशैली में महत्वपूर्ण सुधार होते हैं। शायद नीतिवचन 8 के शुरुआती खंडों का सबसे महत्वपूर्ण निहितार्थ एक निमंत्रण का नवीनीकृत मुद्दा है जो एक सचेत विकल्प प्रदान करता है। अब हम ज्ञान की आत्म-प्रशंसा की ओर मुड़ते हैं।

नीतिवचन 8.12 में, यह कहा गया है कि वह चतुराई, ज्ञान और विवेक के साथ रहती है। उन्हीं बौद्धिक गुणों का उल्लेख नीतिवचन के परिचय की पुस्तक, नीतिवचन 1.4 में किया गया है, जिसकी चर्चा हमने पाठ 2 में की है। इससे पता चलता है कि व्यक्तिगत ज्ञान की वाणी संपूर्ण नीतिवचन 1-9 के समग्र डिजाइन में बारीकी से एकीकृत है और, वास्तव में, पूरी किताब। बुद्धि एक संचारी गुण है, जैसा कि विशेष रूप से व्यक्तिगत ज्ञान के अनुभागों में देखा जा सकता है।

इसका क्या मतलब है कि जिस गुण को मूर्त रूप दिया गया है उसे संप्रेषित किया जा सकता है? वॉल्टके की राय में, ज्ञान और विवेक को खोजने वाली बुद्धि की आकृति का अर्थ है कि, उद्धारण, ज्ञान स्वयं सदगुणों के बाद विश्वास करने वाले साधक की भूमिका को दर्शाता है, अंत उद्धारण, यह दर्शाता है कि, मैं फिर से उद्धृत करता हूं, ये गुण ज्ञान से अविभाज्य हैं, अंत उद्धारण। ऐसा हो सकता है, लेकिन इसका एक और दिलचस्प पहलू है. नीतिवचन 8 में व्यक्त बुद्धि स्वयं को परमेश्वर की आत्मा के रूप में चित्रित कर सकती है।

छंद 14-16 में, ज्ञान उन उपहारों की गणना करके मानवीय मामलों में अपनी भूमिका के बारे में विस्तार से बताता है जो वह समाज पर शासन करने वालों को देता है, परामर्श, योग्यता और शक्ति, जो प्रभावी शासन कला के लिए आवश्यक तत्व हैं। दो महत्वपूर्ण समानताएँ ईश्वर की आत्मा के साथ व्यक्तिगत ज्ञान की पहचान का सुझाव देती हैं। पहला, अय्यूब 12-13 में, बुद्धि, शक्ति और सलाह परमेश्वर के गुण हैं।

दूसरा, यशायाह 11-2 में वर्णित आदर्श मसीहा राजा पर विश्राम करने वाली प्रभु की आत्मा को उद्धारण, ज्ञान और समझ की भावना, सलाह और शक्ति की भावना, ज्ञान की भावना और भय के रूप में वर्णित किया गया है। भगवान। वाल टीके ने 8-14 पर इस प्रकार टिप्पणी की, जो न्यू टेस्टामेंट से सीधी समानताएं दर्शाता है। मैं उद्धृत करता हूं, गुणों का यह समूह ज्ञान को स्वयं भगवान के बहुत करीब लाता है, क्योंकि अय्यूब 12-13 के अनुसार, वह भी उसके पास है जो वह अपनी संपत्ति के रूप में दावा करती है।

एक शासक के लिए इन स्वर्गीय गुणों की आवश्यकता होती है, देखें 8-15। यशायाह मसीहा राजा, यशायाह 11-2 के मध्यस्थ के रूप में प्रभु की गतिशील आत्मा का श्रेय देता है, लेकिन बुद्धि उन लोगों के लिए मध्यस्थ बनाती है जो उससे प्यार करते हैं। अकेले यीशु मसीह ने उन्हें पूरी तरह से हासिल किया, और वह अपने चर्च के लिए भगवान से ज्ञान बन गए, उदाहरण के लिए 1 कुरिन्थियों 1-30 और कई अन्य नए नियम के अंश देखें।

चूँकि मानवीकरण के रूप में बुद्धि इन बौद्धिक गुणों का अवतार है, यह कथन कि वह उनमें से एक के साथ रहती है और दूसरों को पाती है, इसका शाब्दिक अर्थ नहीं लिया जाना चाहिए। शायद हमारे पास यहां एक सादृश्य है जो हमें बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है कि नीतिवचन 8-22 में भगवान द्वारा ज्ञान प्राप्त करने का क्या अर्थ है। दूसरी ओर, हालाँकि, यह आंकड़ा बताता है कि व्यक्तित्व के रूप में ज्ञान उन गुणों या विशेषताओं से भिन्न और अधिक है जिन्हें वह अपनाती है।

चूँकि वह उनके पास है, इसलिए वह उन्हें मनुष्यों तक भी पहुँचा सकती है, जैसा कि श्लोक 14-16 में व्यक्त किया गया है। मेरे पास अच्छी सलाह और सच्ची बुद्धि है। मेरे पास अंतर्दृष्टि है।

मेरे पास ताकत है. मेरे ही द्वारा राजा राज्य करते हैं, और हाकिम न्याय का निर्णय करते हैं। मेरे ही द्वारा हाकिम और प्रधान लोग प्रभुता करते हैं, वे सब जो ठीक से शासन करते हैं।

हालाँकि, महत्वपूर्ण बात यह है कि जिस तरह से मानवकृत ज्ञान अपने गुणों को उन मानव राजाओं और शासकों को प्रदान करता है जो उसकी मदद से शासन करते हैं और शासन करते हैं। यह कल्पना एक साहित्यिक उपकरण से कहीं अधिक का सूचक है, और निकटतम सादृश्य जिसके बारे में हम सोच सकते हैं वह वह है जिस तरह से नासरत के यीशु अपने बारे में बात करते हैं और जिस तरह से टार्सस के पॉल नए नियम में पवित्र आत्मा के बारे में बात करते हैं। नीतिवचन 8 में वर्णित व्यक्तिगत ज्ञान समस्त मानवता के लिए एक सार्वभौमिक उपहार है।

सब राजा मेरे ही द्वारा राज्य करते हैं, और न्यायी न्याय का निर्णय करते हैं। मेरे ही द्वारा हाकिम और प्रधान लोग प्रभुता करते हैं, वे सब जो ठीक से शासन करते हैं। श्लोक 15-16.

इस सार्वभौमिकता को बारूक 3 और बेन सिराह 24 की पृष्ठभूमि में और भी अधिक स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है, जो व्यक्तिगत ज्ञान को एक विशेष रूप से इज़राइली घटना बनाते हैं। नीतिवचन में व्यक्त ज्ञान आत्मा के उपहारों का एकमात्र वितरक है। श्लोक 14-16 स्पष्ट करते हैं कि बुद्धि मनुष्यों को दिए गए कई गुणों और दैवीय गुणों में से एक नहीं है, बल्कि वह है जो अन्य सभी को प्रदान करती है।

अब मैं एक सामाजिक प्राणी के रूप में नीतिवचन 8 में व्यक्त ज्ञान की ओर मुड़ता हूँ। बुद्धि प्रेम करने और प्रेम पाने की लालसा रखती है। हालाँकि यह धारणा नीतिवचन में कहीं और दिखाई देती है, उदाहरण के लिए 4.6, 7.4, 29.3 और शायद 8.34-35 में भी, यह नीतिवचन 8 में सबसे विशिष्ट रूप से व्यक्त की गई है। श्लोक 17 में लिखा है, मैं उन लोगों से प्यार करता हूँ जो मुझसे प्यार करते हैं, और जो मुझे ढूँढते हैं लगन से मुझे ढूँढो।

श्लोक 21 इस वाक्यांश को दोहराता है, जो मुझसे प्रेम करते हैं। और श्लोक 31 में, मानवीकृत ज्ञान वर्णन करता है कि वह सृष्टि की शुरुआत से मानव जाति में कैसे प्रसन्न थी। माइकल फॉक्स ने उचित टिप्पणी की है, बुद्धिमान होने का मतलब केवल ज्ञान को जानना नहीं है बल्कि उससे प्रेम करना और उसकी तलाश करना है।

हालाँकि उसे खोजने और प्यार करने की बात करना शायद बेहतर होगा। वाल्टके ने व्यक्तिगत ज्ञान की पहली उपस्थिति से स्वर में बदलाव को भी नोट किया। 1.20-33 में उसने धमकी भरे भाषण का प्रयोग किया।

यहां वह सिर्फ प्यार की भाषा बोलती है। 'यद्यपि उन्होंने ज्ञान और उसके साधकों के बीच प्रेम की पूर्ण पारस्परिकता को पहचाना, वाल्टके की पुस्तक की शिक्षाओं के साथ व्यक्तिगत ज्ञान की आग्रहपूर्ण पहचान निम्नलिखित कथन में फिर से सामने आती है, मैं उद्धृत करता हूँ, मानवीकरण यह दर्शाता है कि जब ऋषि की शिक्षाओं को याद किया जाता है आध्यात्मिक स्नेह, वे किसी के चरित्र में समाहित हो जायेंगे, अंत उद्धरण। इस धारणा का विरोध करना मुश्किल है कि व्यक्तिगत ज्ञान की इस व्याख्यात्मक चमक में कुछ खो गया है जो उस रिश्ते का वर्णन करता है जो वह उन लोगों को प्रदान करता है जो उसे तलाशते हैं।

मैं उन लोगों से प्यार करता हूँ जो मुझसे प्यार करते हैं, और जो मुझे पूरी लगन से ढूँढते हैं वे मुझे पा लेंगे। मैं धर्म के मार्ग पर चलता हूँ, और जो मुझ से प्रेम रखते हैं, उन्हें धन देता हूँ, और उनके

भण्डार भर देता हूँ, 8.17-21. उदाहरण के लिए, जैसा कि वॉल्टके ने स्वयं उल्लेख किया है, बाइबिल में ईश्वर के साथ मानवीय संबंधों के बारे में भी इसी तरह के कथन दिए गए हैं। उदाहरण के लिए, जो मेरा आदर करते हैं मैं उनका आदर करूंगा, और जो मेरा तिरस्कार करते हैं उनका तिरस्कार किया जाएगा, 1 शमूएल 2.30। 2 सैमुअल 22.26 भी देखें, जो निस्संदेह भजन 18.26 के समान है। और फिर यह वाक्यांश भी, भजन 145.20 में, प्रभु उन सभी पर नज़र रखता है जो उससे प्यार करते हैं। मिस्र के ज्ञान साहित्य में भी तुलनीय कथन हैं।

उदाहरण के लिए, ता उन सभी से प्यार करता है जो उससे प्यार करते हैं और जो उससे पूछते हैं, और भगवान उससे प्यार करता है जो उससे प्यार करता है। यह देखना आसान है कि बाद की पीढ़ियों ने ज्ञान के मानवीकरण में दिव्य गुणों को कैसे पहचाना। अब मैं श्लोक 22-31 की ओर मुड़ता हूँ।

दूसरे भाग का शेष भाग, या शायद मुझे नीतिवचन 8 का दूसरा और तीसरा भाग भी कहना चाहिए, समान लंबाई के दो भागों में आते हैं। श्लोक 22-26 सृष्टि से पहले ज्ञान की उत्पत्ति पर, और श्लोक 27-31 सृष्टि के दौरान उत्सव में उसकी उपस्थिति पर। और ब्रूस वाल्टके ने दोनों भागों को एक साथ बांधने वाले विषयगत चियास्म का पता लगाया।

A. बुद्धि की उत्पत्ति, श्लोक 22-23। बी. सृष्टि की नकारात्मक स्थिति, छंद 24-26। बी'।

रचना की सकारात्मक प्रस्तुति, श्लोक 27-29. और ए'. मानवता की उत्पत्ति का ज्ञान का उत्सव।

फिर से, नीतिवचन में शिक्षा के साथ वाल्टके की ज्ञान की पहचान, छंद 22-31 के माध्यम से आती है, उनकी राय में, उद्धरण, सोलोमन की शिक्षा को उत्कृष्ट उंचाइयों तक ले जाता है, अंत उद्धरण। वाल्टके के अनुसार श्लोक 22-31 के तीन कार्य हैं। सबसे पहले, ज्ञान के पूर्व-अस्तित्व का प्रदर्शन सिखाने के लिए ज्ञान के अधिकार को स्थापित करने के लिए बड़प्पन के पेटेंट के रूप में कार्य करता है।

दूसरा, सिखाने के लिए बुद्धि की क्षमता स्थापित करने के लिए बुद्धि के व्यापक ज्ञान का प्रदर्शन। और तीसरा, ईश्वर के रचनात्मक कार्य में ज्ञान की प्रसन्नता के बारे में कथा ज्ञान की शिक्षा की प्रभावशीलता को स्थापित करती है। डेरेक किडनर के शब्दों में कहें तो, एकमात्र ज्ञान जिसके द्वारा आप रोजमर्रा की चीजों को उनकी प्रकृति के अनुरूप संभाल सकते हैं, वह ज्ञान है जिसके द्वारा उन्हें पहले स्थान पर दैवीय रूप से बनाया और व्यवस्थित किया गया था।

वैयक्तिकृत ज्ञान के आनंद के संबंध में, वाल्टके ने सामान्य रूप से ब्रह्मांडीय क्रम में वैयक्तिकृत ज्ञान के आनंद पर अधिक ध्यान केंद्रित किया। उद्धरण, सामाजिक व्यवस्था को कम करने की बुद्धिमान शासक की क्षमता ब्रह्मांड को आदेश देने वाले भगवान के आदेशों में उसकी अपनी खुशी के अनुरूप है, अंत उद्धरण। मेरे विचार में, यह ज्ञान के आनंद के पूरे पहलू को शामिल नहीं करता है और मानवता में ज्ञान के आनंद के प्रेरक प्रभाव को पहचानने में विफल रहता है।

यह तथ्य कि सृजित व्यवस्था में मनुष्य को उसकी प्रसन्नता की एकमात्र विशेष वस्तु के रूप में चुना गया है, मनुष्य के प्रति उसके अनियंत्रित उत्साह और महान स्नेह पर दृढ़ता से जोर देता है।

निहितार्थ से, उसके इरादों को अत्यधिक सकारात्मक दिखाया जाता है और उसकी शिक्षा को पूरी तरह विश्वसनीय के रूप में चित्रित किया जाता है। उसका मतलब मानवता के लिए अच्छा है।

सृष्टि और मानवता में व्यक्तिगत ज्ञान के आनंद के बारे में कथन का प्रभाव अत्यधिक प्रेरक है क्योंकि वे संबंधपरक कथन हैं। और मैं श्लोक 22 के बारे में कुछ और विस्तृत शब्द कहना चाहता हूं, जो निश्चित रूप से प्रारंभिक चर्च में नीतिवचन 8 की प्रारंभिक ईसाई व्याख्याओं में शास्त्रीय ग्रंथों में से एक है। श्लोक 22 व्यक्त करता है कि सृजन के लिए ज्ञान की प्राथमिकता न केवल अस्थायी है, जो पहले है, बल्कि गुणात्मक भी है, जो शायद पैदा हुई है, बनाई नहीं गई है।

हम एक क्षण में इस पर वापस आएंगे क्योंकि हम इस श्लोक में क्रिया काना के अर्थ पर दोबारा गौर करेंगे। मैं शायद इसे थोड़ा और संक्षिप्त करना चाहता हूं और काना के अर्थ के बारे में वह सब कुछ नहीं कहना चाहता जो कहा जा सकता है, आंशिक रूप से क्योंकि मैं पहले ही व्याख्यान में इसका कुछ हिस्सा कवर कर चुका हूं। यहां मैं बस इतना कहना चाहता हूं कि मेरे ख्याल से यहां काना का अर्थ प्राप्त करने के रूपक विचार की निरंतरता भी है और उसका विस्तार भी है।

मुझे ऐसा लगता है कि यह संभव है कि उत्पन्न होने, जन्म लेने की धारणा वास्तव में है, और सृजन का अर्थ भी है, ये सभी अनुवाद हैं जो इस क्रिया के लिए प्रस्तावित किए गए हैं, विशेष रूप से यहां 8.22 में, यहां दिए गए हैं सबसे कम संभव. तो, अब मैं यहां जो तर्क देना चाहता हूं वह यह है कि वास्तव में इस अत्यधिक रूपक में, या मुझे अति-रूपक में भी कहना चाहिए, आदिम समय में ज्ञान के अस्तित्व और आंदोलनों और पहचान की आत्म-अभिव्यक्ति जानबूझकर अस्पष्ट है। इसलिए, एकांगी ईसाएली आस्था के शुरुआती संदर्भ में, ईश्वर द्वारा ज्ञान अर्जित करने या ईश्वर द्वारा निर्मित या उपयोग किए जाने का विचार पूरी तरह से एक हठधर्मी या व्यवस्थित धार्मिक दृष्टिकोण से सुसंगत है।

परंतु इस क्रिया की बहुलता से अन्य अर्थ भी गुप्त रूप से विद्यमान रहते हैं। वॉल्टके आश्वस्त थे कि इस अनुच्छेद ने उनकी शुरुआत में जन्म देने वाली कल्पना को लागू करने वाले ज्ञान को मूर्त रूप दिया है। हालाँकि, तुरंत, वॉल्टके ने अनुच्छेद की व्याख्या के इतिहास में दो गंभीर प्रकार की त्रुटियों के प्रति चेतावनी दी।

पहला ईश्वर की शाब्दिक संतान के रूप में व्यक्त ज्ञान की समझ है। मैं उद्धृत करता हूं, ज्ञान उत्पन्न करने में यौन साथी के साथ भगवान को शामिल करने वाली एक शाब्दिक बहुदेववादी व्याख्या इस पुस्तक में अकल्पनीय है। रूपक ने मुझे सामने लाया, यह दर्शाता है कि सुलैमान की प्रेरित बुद्धि ईश्वर के आवश्यक अस्तित्व से आती है।

यह एक रहस्योद्घाटन है जिसका ईश्वर की प्रकृति और अस्तित्व के साथ एक जैविक संबंध है, बाकी सृष्टि के विपरीत जो उसके बाहर अस्तित्व में आई और उसके अस्तित्व से स्वतंत्र है। दूसरी त्रुटि को इस उद्धरण के साथ संलग्न एक महत्वपूर्ण फुटनोट में संबोधित किया गया है। फिर, वॉल्टके का एक उद्धरण।

यह धारणा कि ज्ञान की उत्पत्ति सदैव होती रहती है। क्षमा करें, मैं बस इसे दोहराऊंगा। टाइपिंग में त्रुटि हुई। यह धारणा कि ज्ञान की उत्पत्ति सदैव होती है, ईसाई हठधर्मिता पर आधारित है, व्याख्या पर नहीं।

श्लोक 22 से 26 ज्ञान की उत्पत्ति को एक बार की घटना और क्रिया के रूप में दर्शाते हैं, न कि शाश्वत जन्म या शाश्वत कब्जे में आने के रूप में। ऑगस्टीन, केल्विन और अन्य लोगों ने गलती की कि उन्होंने ज्ञान की गलत व्याख्या ईश्वर के हाइपोस्टैसिस के रूप में की, जिसे उन्होंने यीशु मसीह के साथ जोड़ा, न कि ऋषि के ज्ञान के अवतार के रूप में। मैं इस पर अपने दृष्टिकोण से कुछ टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ, विशेषकर, फिर से, रूपकों के प्रभाव पर पूरा ध्यान देने के संबंध में।

श्लोक 22 में, जब ज्ञान कहता है, भगवान ने मुझे अपने काम की शुरुआत में बनाया, तो यहां से शुरू होने वाला अनुवादित शब्द, फिर से, शब्द है, जिस पर हम पहले ही कई व्याख्यानों में चर्चा कर चुके हैं। इसके चार अलग-अलग अर्थ हो सकते हैं और शायद इससे भी अधिक। सबसे पहले, समय में।

वैसे, यह वाल्टके का पसंदीदा अर्थ है। दूसरा, गुणवत्ता का महत्व, यानी किसी शृंखला में सर्वश्रेष्ठ। विकल्प, प्रमुख या अग्रणी।

तीसरा, सिद्धांत रूप में पहला। और फिर चौथा, पहला पौरुष में, पहलौठे के अर्थ में। जब ज्ञान कहता है कि वह उसके काम की शुरुआत में बनाई गई थी, तो इसका शाब्दिक अर्थ उसके रास्ते की शुरुआत में होता है।

संभवतः, वास्तव में, गतिविधि या कार्यों की अधिक विशिष्ट भावना के साथ आचरण के रूपक के रूप में इसका अपना सामान्य अर्थ होता है। बुद्धि की उत्पत्ति, प्राप्ति, सृजन, या ये तीनों, ईश्वर के सबसे प्रारंभिक कर्मों के रूप में होते हैं, न कि उसके पौरुष के रूप में। यह सुदूर अतीत में हुआ था।

और चूँकि व्यक्तिगत ज्ञान उसके कर्मों का हिस्सा है, यह वाक्यांश ज्ञान को भगवान से अलग करता है, यहाँ तक कि बाकी अंश उसे शेष सृष्टि से अलग करते हैं, जैसा कि वाल्टके ने ठीक ही कहा है। जब हम श्लोक 23 को देखते हैं, तो युगों पहले मुझे पृथ्वी की शुरुआत से पहले, सबसे पहले स्थापित किया गया था। नए संशोधित मानक संस्करण में सदियों पहले अनुवादित शब्द हिब्रू शब्द ओलम है, जो कभी-कभी, विशेष रूप से भगवान के संबंध में, अनंत काल को संदर्भित कर सकता है, लेकिन आम तौर पर और सबसे नियमित रूप से सबसे दूरस्थ अतीत या भविष्य का मतलब होता है, जब तक कि, जैसा कि मैंने कहा पहले से ही, यह ईश्वर की स्थिरता पर लागू होता है, जहां यह अनंत काल को निर्दिष्ट करता है।

और इसलिए यहां ऐसा लगता है कि यह सबसे सुदूर अतीत के चरम टर्मिनस, आर्क को, में शुरुआती बिंदु को निर्दिष्ट करता है, एक सापेक्ष अवधारणा, या बल्कि मुझे एक सापेक्ष समय सीमा कहना चाहिए। वाल्टके फिर से, ज्ञान शाश्वत होने का दावा नहीं कर रहा है, क्योंकि देखने

में समय उसके जन्म का है। केवल धार्मिक संदर्भ में जहां ईश्वर को किसी भी शुरुआत से पहले अस्तित्व में माना जाता है, वहां मुझे अनंत काल से अस्तित्व में माना जा सकता है।

मैं श्लोक 24 पर भी टिप्पणी करना चाहता हूं। जब कोई गहराई नहीं थी, तब मुझे सामने लाया गया था। जब झरने नहीं थे तो मैं पानी से भरपूर था।

अनुवादित वाक्यांश 'मैं पैदा हुआ था' का उपयोग हिब्रू में बच्चे के जन्म के समय छटपटाने के लिए क्रिया क्यूएल के रूप में किया जाता है। सक्रिय मनोदशा में, क्रिया दर्शाती है कि एक माँ बच्चे के जन्म के समय किस प्रकार छटपटाती है, जो पहले संकुचन से शुरू होती है और केवल उसके शरीर से बच्चे के जन्म के साथ समाप्त होती है। निष्क्रिय मनोदशा में, यह नवजात शिशु के परिप्रेक्ष्य से प्रसव को संदर्भित करता है, अक्सर रूपक संदर्भ में, उदाहरण के लिए भजन 139, श्लोक 13 में।

यहां, और श्लोक 25 बी में इसके चिस्टिक समानांतर में, यह रूपक रूप से अपने स्वयं के दृष्टिकोण से व्यक्तित्व ज्ञान के जन्म का वर्णन करता है। हालाँकि ईश्वर क्रिया का एजेंट है, इस प्रकार वह माँ के रूप में अपनी भूमिका को दर्शाता है, इस अंतर्निहित लिंग उलटफेर ने शायद ही कभी, यदि कभी हो, तो बाह्य मस्तिष्क पर कब्जा कर लिया है। वाल्टके ने सही ढंग से नोट किया कि यह उद्धरण, श्लोक 22 में काना के लिए सुझाए गए जन्म रूपक को निर्विवाद रूप से व्यक्त करता है, जो क्रिया की बहुसंयोजक संभावनाओं में से एक है।

यह पुष्टि करता है, मेरी राय में, कि जन्म देने का पहलू वास्तव में कविता 22 में व्यक्त किया गया है। हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं है कि काना की अर्थपूर्ण सीमा, प्राप्त करना, कब्जा करना, बनाना, पैदा करना, आगे लाना, इसलिए होना चाहिए केवल जन्म के पहलू तक ही सीमित रहें। अन्य अर्थ मौजूद रहते हैं और ज्ञान यहाँ जो कह रहा है उसके अर्थ को समृद्ध करते हैं।

वाल्टके ने यहां अपना दावा दोहराया कि, उद्धरण, इन ग्रंथों में कोई पौराणिक वास्तविकता का इरादा नहीं है क्योंकि भगवान का कोई जीवनसाथी नहीं है और महिला साथी के बिना एक पौराणिक वास्तविकता असंभव है। जो भी हो, मुझे लगता है कि इस बारे में बहस शुरू करना भी एक अजीब बात है और ऐसा केवल इसलिए होता है क्योंकि व्याख्याकार रूपक से बहुत जल्दी दूर चले जाते हैं। रूपक कहता है कि ज्ञान भगवान द्वारा प्रसूत बच्चे के जन्म के साथ आया, लेकिन रूपक में भगवान को एक महिला देवता के रूप में, ज्ञान की माँ के रूप में माना जाता है।

बेशक बुद्धि स्वयं भी ईश्वर को एक पुरुष देवता, इसराइल के ईश्वर के रूप में मानती है। और इसलिए, हमारे पास यहां जो कुछ है वह वास्तव में एक रूपक वर्णन है जिसका शाब्दिक अर्थ नहीं लिया जाना चाहिए। हां, जन्म देने वाली कल्पना का उपयोग किया जा रहा है, लेकिन इससे न तो ईश्वर स्त्री बन जाता है और न ही इसका मतलब यह है कि ईश्वर अचानक पत्नी या जीवनसाथी बन जाता है।

यह रूपक की अति-व्याख्या होगी। अब जब हम श्लोक 29 तक पहुँचते हैं, तो ज्ञान ने दुनिया की रचना के प्राकृतिक चित्रणों को इसमें मानवता के स्थान पर और अधिक संकीर्ण रूप से केंद्रित

कर दिया है। इसलिए, पानी अब रहने योग्य भूमि से अलग हो गया है जो सुरक्षित है और मानक संस्करण श्लोक 29 का अनुवाद करता है जब उसने समुद्र को उसकी सीमा सौंपी थी ताकि जब वह पृथ्वी की नींव को चिह्नित करे तो पानी उसके आदेश का उल्लंघन न कर सके।

हालाँकि, बहुसंयोजक हिब्रू अभिव्यक्ति के साथ एक वर्डप्ले है। यह सीमा या डिक्री है जो दो बार प्रकट होती है। वह वाक्यांश जब उसने समुद्र के लिए अपना आदेश निर्धारित किया था, पद के अंत में दूसरी घटना के समान था जब उसने पृथ्वी की नींव का आदेश दिया था।

वाक्यांश और पानी उसके आदेश से परे नहीं जा सकता है, शाब्दिक रूप से मुंह से एक रूपक उसी विचार को लेता है जैसा कि अय्यूब 38.11 में है और इसलिए पुनरावृत्ति और निर्माता ने अपरिवर्तनीय कानून या अध्यादेश स्थापित किए हैं जो पृथ्वी के लिए सीमाएं निर्धारित करते हैं जिनका शत्रु समुद्र उल्लंघन नहीं कर सकता है। इसे फिर से यहां वॉल्टके से लिया गया है। मैं इस पर इतना समय इसलिए खर्च कर रहा हूँ क्योंकि ईश्वरीय आदेश के विचार ने वास्तव में दिव्य टोरा के साथ व्यक्तिगत ज्ञान की पहचान को प्रेरित किया है जो अन्य यहूदी साहित्य में ईश्वर के आदेशों की लिखित अभिव्यक्ति है।

उदाहरण के लिए, बेन सिरा में. अब मैं श्लोक 30 से 31 की ओर मुड़ता हूँ। यहां ज्ञान कहता है कि तब मैं एक कुशल कार्यकर्ता की तरह उसके साथ था और मैं प्रतिदिन उसके सामने आनंदित होता था, हमेशा उसकी बसी हुई दुनिया में आनंदित होता था और मानव जाति में आनंदित होता था।

मैंने इसे नए संशोधित मानक संस्करण से पढ़ा है, लेकिन जैसा कि हम देखेंगे कि इन छंदों का अनुवाद कैसे किया जा सकता है, इसकी कई अन्य संभावनाएं हैं। नए संशोधित मानक संस्करण में अनुवादित मास्टर वर्कर शब्द हिब्रू शब्द ओमान है जो एक बहुत ही दुर्लभ शब्द है और जैसा कि अक्सर दुर्लभ शब्दों के मामले में होता है, हम हमेशा निश्चित नहीं होते कि उनका क्या मतलब है। और इसलिए वास्तव में ओमान का मतलब लगातार हो सकता है लेकिन इसका मतलब शिल्पकार भी हो सकता है।

इसका मतलब हो सकता है और क्रिया ओमान के एक निष्क्रिय कृदंत के रूप में अमुन में संशोधित किया जा सकता है और फिर इसका मतलब देखभाल किया जाना है। और वहां से कुछ लोगों का सुझाव है कि शब्द का अर्थ वार्ड या नर्सिंग से संबंधित हो सकता है। और कई अन्य संभावनाएं भी हैं और हम एक क्षण में इस पर वापस आते हैं।

वॉल्टके स्वीकार करते हैं कि वार्ड या नर्सलिंग वास्तव में प्रासंगिक रूप से उपयुक्त हो सकते हैं, लेकिन कई कारण हैं कि ऐसा संभवतः क्यों नहीं है। सबसे पहले, यदि शब्द को संज्ञा के रूप में लिया जाता है तो हम स्त्री रूप की अपेक्षा करेंगे जैसे कि काल-स्त्री सक्रिय कृदंत ओमिनेट नर्स या नर्सिंग या कुछ और। यह समझने से कम है क्योंकि नर्स का तात्पर्य किसी ऐसे व्यक्ति से है जो किसी और की देखभाल करता है जबकि नर्सिंग का तात्पर्य किसी ऐसे व्यक्ति से है जिसका पालन-पोषण किया जा रहा है।

फॉक्स की व्याख्या इस पर एक भिन्नता है। उन्होंने तर्क दिया कि रूप एक कल-इनफ़िनिटिव निरपेक्ष है जिसका अर्थ उठाया जा रहा है या बढ़ रहा है। फॉक्स की अवधारणा के पक्ष में यह तथ्य बोलता है कि इसके लिए न तो पाठ्य संशोधन की आवश्यकता है और न ही स्त्री रूप की और इसे प्रारंभिक यहूदी टिप्पणीकारों इब्र जना और मोशे किम्ची जैसे पहले के अधिकारियों का समर्थन प्राप्त है।

हालाँकि, वाल्टके को व्याकरण संबंधी समस्याएँ दिखाई दीं। विशेष रूप से, कल-इनफ़िनिटिव आवश्यक निष्क्रिय के बजाय अर्थ बढ़ाने के साथ सक्रिय है जिसे निफल स्टेम द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। इस व्याख्या के विरुद्ध वाल्टके का दूसरा तर्क बहुत कम महत्व रखता है।

वह कहते हैं, विज्डम का यह दावा कि जब वह एक छोटी बच्ची थी तब वह प्रभु के रचनात्मक कार्यों में आनंदित थी, गंभीर अधिकार होने के उसके दावे को बहुत विश्वसनीय नहीं बनाता है। गंभीर अधिकार की धारणा सहायक नहीं है। न ही यह विचार है कि एक चंचल छोटे बच्चे के रूप में विज्डम का आत्म-वर्णन उसके अधिकार को कमजोर करता है।

बल्कि, समय की शैशवावस्था में एक बच्चे के रूप में वर्णन उसे प्राचीन और इस प्रकार ज्ञान के भाषण के वर्तमान समय में आधिकारिक के रूप में चिह्नित करता है और भगवान की रचना में उसकी चंचल खुशी उसे मानवता के प्रति उदार और इस प्रकार भरोसेमंद के रूप में चिह्नित करती है। ओमान का चौथा अर्थ बस इतना है कि इसका मतलब ईमानदारी से होता है। यह व्याख्या शब्द को ओमान 1 के कल-इनफ़िनिटिव निरपेक्ष के रूप में दृढ़ या वफादार मानती है और इसे कुछ ग्रीक अनुवादों सिमैचस, थियोडोशन और टारगम द्वारा कई आधुनिक टिप्पणीकारों द्वारा दर्शाया गया है।

मैसोरेटिक पाठ द्वारा विभाजित समानांतर तत्वों के प्रतिनिधित्व में वाल्टके के पसंदीदा विकल्प के पक्ष में एक दिलचस्प तर्क वाक्यांश को तीन गुना समानांतर के रूप में लेना है। और मैं ईमानदारी से उसके साथ था और मैं हर समय उसके सामने जश्न मनाने का आनंद ले रहा था। वाल्टके के विचार में दिन-ब-दिन पिछले आधे जीवन पर ईमानदारी से जोर दिया जाता है और स्पष्ट किया जाता है।

मेरे विचार में, पर्यायवाची समांतरता, सटीक समांतरता से संबंधित बीते युग की दो अभिव्यक्तियों का संबंध थोड़ा महत्व रखता है। जबकि उसके सामने प्रसन्न होने और जश्न मनाने के बीच समानता स्पष्ट है, उसके बगल में इन दो अभिव्यक्तियों का संबंध दूर-दूर है। जबकि ईमानदारी को दैनिक और हर समय के अर्थ से संबंधित माना जा सकता है यदि ईमानदारी बनाना आवश्यक है।

वाल्टके ने निष्कर्ष निकाला कि हालाँकि ये सभी व्याख्याएँ संभव हैं और इन्हें ऐतिहासिक समर्थन प्राप्त है, लेकिन अंतिम व्याख्या श्लोक 22 से 31 के व्यापक संदर्भ और श्लोक 30 के तत्काल संदर्भ के लिए सबसे उपयुक्त है। वाल्टके ने यह भी बताया कि क्या दांव पर लगा है। उद्धरण: किसी रचनाकार के हाथ में एक उपकरण होना एक बात है।

जो उठता है और कार्य करता है, वह बिल्कुल दूसरी बात है। और हम देख सकते हैं कि सृजन की उपलब्धि में योगदान देने वाले एक स्वतंत्र अभिनेता होने के विचार से वास्तव में कैसे धार्मिक परिणाम उत्पन्न होते हैं। वाल्टके ने सोचा कि कारीगर के रूप में ओमान की व्याख्या को नीतिवचन 3.19 में समर्थन मिल सकता है जहां भगवान ने निर्माण में एक एजेंट के रूप में ज्ञान का उपयोग किया था।

लेकिन संभवतः इसका अर्थ यह है कि बुद्धि उसका साधन थी। लेकिन चूँकि बुद्धि मानवकृत होती है और अपने बारे में बोलती है तो इसका स्पष्ट तात्पर्य यह है कि वह स्वयं को एक साधन नहीं बल्कि एक सहयोगी मानती है। वान लीउवेन ने अपनी टिप्पणी में तर्क दिया कि ज्ञान के सुमेरियन देवता एन्की और विश्व व्यवस्था की आत्म-प्रशंसा, जहां वह खुद को दिव्य राजा अनु के शिल्पकार और परामर्शदाता के रूप में चित्रित करते हैं, भगवान के वास्तुकार सलाहकार के रूप में ज्ञान के समानांतर एक सटीक वैचारिक है। जिसे राजा यहोवा सब वस्तुओं को उनके उचित क्रम में रखता है।

अंत उद्धरण. वाल्टके ने शिल्पकार की व्याख्या के विरुद्ध तर्कों की एक संक्षिप्त सूची प्रस्तुत की। हम परिच्छेद को पूर्ण रूप से उद्धृत करेंगे क्योंकि यह सभी मुख्य तर्कों को एक बिंदु पर एक साथ लाता है।

मैं उद्धृत करता हूँ कि अच्छे शाब्दिक समर्थन की कमी के अलावा व्याख्या कारीगर प्रासंगिक रूप से नीतिवचन 8 22 से 29 के संदेश को फैलाता है कि भगवान सभी चीजों का निर्माता और ज्ञान का निर्माता है। यह दावा कि वह वास्तव में कारीगर है, अप्रत्याशित रूप से अचानक सामने आएगा और फिर अप्रत्याशित रूप से हटा दिया जाएगा। उसके तर्क में इस बिंदु तक ज्ञान सृष्टि के अस्तित्व में आने से पहले ईश्वर द्वारा उत्पन्न होने का दावा करके और उस समय मौजूद होने का दावा करके गंभीर अधिकार प्राप्त करने के लिए अपने मामले का निर्माण कर रहा है जब प्रभु ने स्वर्ग, समुद्र और पृथ्वी की स्थापना की थी।

यदि वह खुद को सृजन में एक सक्रिय एजेंट के रूप में प्रस्तुत करने का इरादा रखती है तो कोई उससे यह अपेक्षा करेगा कि वह अपने तर्क में इतना महत्वपूर्ण योगदान दे कि उसे सब कुछ पता हो क्योंकि उसने उन्हें डिजाइन किया और बनाया है और इसलिए लोगों को उसकी बात सुननी चाहिए। इसके अलावा, यह व्याख्या उसके काम में आनंद लेने या खेलने और जश्न मनाने या नृत्य करने के लिए एक खराब समानांतर प्रस्तुत करती है। कोई इस व्याख्या के लिए शिक्षण या बातचीत करने या बनाने आदि जैसी किसी चीज़ की अपेक्षा करेगा।

अंततः यह अद्वितीय होगा और महिला ज्ञान के लिए हिब्रू कविता के खिलाफ एक पुरुष छवि द्वारा खुद का वर्णन करना होगा जब तक कि कोई यह तर्क न दे कि यह एक अप्रमाणित एपिसीन संज्ञा है। अब मैं कुछ मिनटों में वापस आऊंगा कि एपिसीन संज्ञा क्या होती है। लेकिन मुझे यहां केवल टिप्पणी करने और कुछ बिंदु बताने दीजिए।

ओमान शब्द , एक हैपैक्स लेगोमेनन, यदि यह एक संज्ञा है तो परिभाषा के अनुसार एपिसीन है। इस संदर्भ में एक एपिसीन का अर्थ है कि इसे एक ही समय में एक महिला या पुरुष दोनों के लिए संदर्भित किया जा सकता है। तो, ऐसा नहीं है, यह एक संज्ञा है और यह व्याकरणिक रूप से एक

पुरुष संज्ञा है, एक पुल्लिंग संज्ञा है, लेकिन यह उस वर्ग के स्त्री प्रतिनिधि को भी संदर्भित कर सकता है जिसका वह वर्णन करता है।

एपिसीन संज्ञा के बारे में बात करने का यही मतलब है। आखिरी बिंदु तक, निश्चित रूप से ऐसा इसलिए है क्योंकि यह वास्तुकारों के लिए एक दुर्लभ तकनीकी शब्द है और आसपास कोई महिला नहीं थी। हालाँकि, पेशेवर पदनाम का महाकाव्य उपयोग मानवता के अधिकांश इतिहास में अधिकांश भाषाओं के लिए सर्वव्यापी रहा है।

मुद्दों को प्रस्तुत करने का एक और अच्छा तरीका नीतिवचन 8.30 में व्यक्त ज्ञान की भूमिका की तीन अलग-अलग व्याख्याओं के बीच अंतर करना है। सबसे पहले, मानवीकृत ज्ञान सृष्टि में एक स्वतंत्र एजेंट था जो ईश्वर से कुछ हद तक स्वतंत्रता के साथ कार्य करता था। दूसरा, ईश्वर निर्माता है लेकिन उसने संसार की रचना के लिए अपने एजेंट के रूप में मानवकृत ज्ञान का उपयोग किया। इस मामले में, बुद्धि ईश्वर के साथ सह-निर्माता थी।

और तीसरा, बुद्धि ईश्वर के ज्ञान के गुण का विशुद्ध साहित्यिक अवतार है। सृष्टि की रूपरेखा तैयार करने के लिए ईश्वर ने अपनी बुद्धि को एक उपकरण की तरह इस्तेमाल किया। अब मैं प्रसन्नता पर कुछ टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ।

इस रहस्यमय शब्द का अर्थ क्या है? कौन किसमें आनंदित हो रहा है? जैसा कि हमने नया संशोधित मानक संस्करण देखा है, मैं प्रतिदिन उसका आनंद लेता था। तो इस मामले में यह भगवान ही है जो बुद्धि से प्रसन्न होता है। लेकिन निःसंदेह, यह दूसरा तरीका भी हो सकता था।

यह ईश्वर में आनंदित होने वाली बुद्धि हो सकती है या जो कुछ बनाया जा रहा है उसमें आनंदित होने वाली बुद्धि हो सकती है, या तो ईश्वर द्वारा या ईश्वर और उसके द्वारा मिलकर। वाल्टर ने श्लोक 30 में समानता की सख्त समझ के आधार पर इस व्याख्या को खारिज कर दिया। उनका कहना है, 8.31 बी में चिस्टिक समानता इस व्याख्या का खंडन करती है और दिखाती है कि ज्ञान अभिनेता है।

जैसा कि मैंने अन्यत्र दिखाया है, समानता का मतलब यह नहीं है कि समानांतर रेखाओं में दिए गए कथनों का मतलब एक ही है। चूँकि श्लोक 30 में तीन आंशिक रेखाएँ और श्लोक 31 में अन्य दो अर्ध-रेखाएँ इंटरलीनियर और इंटरलीनियर समानता का संयोजन बनाती हैं जिसके परिणामस्वरूप पाँच समानांतर आंशिक रेखाएँ बनती हैं, इन सभी छंदों पर एक साथ विचार करना सबसे अच्छा है। और मैं अभी उन्हें अपने अनुवाद में पाँच समानांतर आंशिक पंक्तियों में विभाजित करके दूँगा।

इस बात सुनो। तब मैं उसके पास था, या तो ईमानदारी से या एक शिल्पकार की तरह या एक छोटे बच्चे की तरह। और मैं प्रतिदिन आनंदित होता था, सर्वदा उसके साम्हने आनंदित होता था, उसकी बसी हुई भूमि में आनंदित होता था, और मेरी प्रसन्नता मानवता थी।

यहां बहुत आनंद हो रहा है। ये दो छंद उद्देश्यपूर्ण, जानबूझकर अस्पष्टता से भरे हुए हैं। जहां मैं ईमानदारी से कहता हूं, एक शिल्पकार की तरह, एक छोटे बच्चे की तरह, पहली आंशिक पंक्ति में तीन शब्द मेरे विचार में एक बहुआयामी शब्द-खेल का निर्माण करते हैं।

मैं एक मिनट में इस पर वापस आऊंगा। और दूसरी आंशिक पंक्ति जानबूझकर अस्पष्ट है। इस प्रकार, प्रसन्नता का तात्पर्य ज्ञान की अपनी प्रसन्नता या ईश्वर की प्रसन्नता से है।

दोनों उत्तरों के पक्ष में प्रासंगिक संकेतक हैं। प्रारंभ में, सबसे मजबूत समानांतर संबंधों को आंशिक रेखाओं दो से पांच के बीच माना जा सकता है, क्योंकि चारों एक शब्द का उल्लेख करते हैं जो खुशी का संकेत देता है। इनमें से अंतिम तीन में, ज्ञान को स्पष्ट रूप से उत्सव मनाने वाले के रूप में चिह्नित किया गया है, न कि भगवान के रूप में।

समानता के पारंपरिक विवरण में, जो इन रेखाओं को पर्यायवाची समानता के रूप में पहचानता है, इससे पता चलता है कि ज्ञान भी वह है जो दूसरी आंशिक रेखा में आनन्दित होता है। हालाँकि, तीन कारण हैं जो अन्यथा सुझाव देते हैं। सबसे पहले, जैसा कि मैंने अन्यत्र दिखाया है, समानता की विशेषता न केवल समानता है बल्कि भिन्नता भी है।

हम पहले ही पिछले व्याख्यानों में इस पर चर्चा कर चुके हैं। दूसरा, इन आंशिक रेखाओं में अन्य प्रकार की समानताएं और समानता के अन्य आयाम हैं जो दूसरी दिशा की ओर इशारा करते हैं। श्लोक 30 से 31 में समानताएँ संपूर्ण दो श्लोकों तक फैली हुई हैं।

नतीजतन, दो छंदों में पांच आंशिक पंक्तियों में से तीन में एक सर्वनाम प्रत्यय शामिल है जिसका पूर्ववर्ती भगवान है। यह सुझाव दे सकता है कि आंशिक पंक्ति दो में ऐसा प्रत्यय जोड़ा जाना चाहिए, जिसके परिणामस्वरूप उनकी प्रसन्नता होगी। या यह सुझाव देता है कि प्रसन्नता की व्याख्या ज्ञान में भगवान की प्रसन्नता के संदर्भ में की जानी चाहिए।

इसके परिणामस्वरूप निर्बाध क्रम में भगवान का संदर्भ देने वाली चार आंशिक पंक्तियों की एक श्रृंखला बन जाएगी। दूसरी ओर, हालाँकि, यदि आंशिक रेखाएँ दो से पाँच समानांतर आंशिक रेखाओं का एक विशेष रूप से करीबी अनुक्रम बनाती हैं, जैसा कि आनंद को संदर्भित करने वाले शब्दों का चियास्टिक अनुक्रम इंगित करता है, ए प्रसन्न, बी आनन्दित, बी प्रमुख आनन्दित, ए प्रमुख प्रसन्न, तो तथ्य यह है कि आंशिक पंक्ति दो और पाँच दोनों में कोई सार्वनामिक प्रत्यय नहीं है जिसका पूर्ववर्ती भगवान है, यह बताता है कि यह वास्तव में ज्ञान है जो आंशिक पंक्ति दो में आनन्दित होता है। क्या आप अभी भी मेरे साथ हैं? ऐसा करने में मुझे बहुत मजा आ रहा है।

लेकिन निश्चित रूप से, जैसा कि आप देख सकते हैं, ये अत्यधिक, अत्यधिक जटिल व्याख्यात्मक मुद्दे हैं। और यही कारण है कि पिछले व्याख्यान में मैंने इस तथ्य के बारे में बात की थी कि जब हमें ऐसे सरल, अविश्वसनीय रूपक और धार्मिक रूप से समृद्ध अंश मिलते हैं, तो हमें वास्तव में उचित परिश्रम के साथ काम करने की आवश्यकता होती है। और हमें विस्तार पर सावधानीपूर्वक धैर्यपूर्वक व्याख्यात्मक ध्यान देने के गुणों को समग्र के एक बड़े दृष्टिकोण के साथ जोड़ा जाना चाहिए और कविता के सौंदर्य सौंदर्य पर कविता के रूप में ध्यान देना चाहिए।

गद्यांश को कुशलतापूर्वक और कल्पनाशीलता से पढ़ना। कल्पना के साथ पढ़ने का मतलब काल्पनिक रूप से पढ़ना नहीं है, बल्कि गद्यांश के विवरण और बारीकियों पर ध्यान देने के साथ-साथ पूरे अध्याय और नीतिवचन 1 से 9 के व्यापक संदर्भ पर एक परिप्रेक्ष्य के साथ पढ़ना है। और अब मैं थोड़ा ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ आनंद, उल्लास और उत्सव के संपूर्ण विचार पर थोड़ा और विस्तार से। वॉल्टके के विचार में, भगवान के सामने प्रसन्न होना और नृत्य करना एक सांस्कृतिक कार्य है।

एक जर्मन टिप्पणीकार, अरंड्ट माइनहोल्ड ने एक अन्य जर्मन विद्वान ओट्टो केहल के नेतृत्व का अनुसरण किया और उनके दिलचस्प प्रस्ताव में कहा गया कि यहां मानवीकृत ज्ञान को मिस्र की देवी माट और हैथोर के समानांतर चित्रित किया गया है। जैसा कि केहल ने प्रदर्शित किया है, इन दो महिला देवताओं की अन्य देवताओं के साथ खिलवाड़ करने और उन्हें उकसाने की भूमिका थी। और परिणामस्वरूप, माइनहोल्ड ने सुझाव दिया कि मानवकृत ज्ञान ने सृजन, खेल और उसके सामने खिलखिलाने से संबंधित गतिविधियों में ईश्वर का इस तरह से समर्थन किया कि उसने अपनी रचनात्मक गतिविधि को बढ़ाने के लिए उसे प्रेरित और प्रसन्न किया।

मीनहोल्ड ने निष्कर्ष निकाला कि, परिणामस्वरूप, व्यक्तिगत ज्ञान को एक शिशु की तरह चित्रित नहीं किया जाता है, बल्कि एक युवा और सुंदर महिला की तरह चित्रित किया जाता है। वॉल्टके ने इस व्याख्या को अस्वीकार कर दिया क्योंकि उनका कहना है कि इस पाठ में बुतपरस्त धारणा को पढ़ना कि एक युवा और प्यारी महिला के रूप में ज्ञान ने भगवान को गतिविधि बनाने के लिए, नृत्य और खेल के माध्यम से रचनात्मक गतिविधि के लिए यौन रूप से उकसाया, बाइबिल के विरोधी पौराणिक पूर्वाग्रह के लिए अनुपयुक्त है। सोचा। हालाँकि, मेनहोल्ड ने विज्डम के आनंदमय खेल में किसी यौन आयाम का सुझाव नहीं दिया।

इसके अलावा, संभावना यह है कि व्यक्तिगत ज्ञान का चित्रण माट और हैथोर की भूमिकाओं से प्रभावित हुआ है, इसका मतलब यह नहीं है कि इन दोनों देवताओं से जुड़े सभी या यहां तक कि अधिकांश संघों को स्वचालित रूप से गैर-आलोचनात्मक तरीके से ले लिया गया था। मुझे लगता है कि हमें एक पल के लिए यहां रुकने की जरूरत है। तो, मुझे एक छोटा सा अवकाश देने के लिए धन्यवाद।

अब मैं अध्याय 8 के इस खंड को पूरा करने के लिए श्लोक 31 में आबाद दुनिया वाक्यांश पर टिप्पणी करना चाहता हूँ। वॉल्टके के अनुसार, यह पूरी सृष्टि के लिए एक पर्याय है और सुझाव देता है कि सृष्टि का उद्देश्य मानवता के लिए उपयुक्त दुनिया थी। श्लोक 30 से 31 का समग्र बहाव सृष्टि के हर चरण में ज्ञान की प्रसन्नतापूर्ण भागीदारी को प्रदर्शित करता है क्योंकि इसने ब्रह्मांड के गठन के अंतिम चरण में मानवता की उपस्थिति के साथ अपने चरम पर पहुंचने की खुशी को प्रकट किया जब यह मानव निवास के लिए पूरी तरह से तैयार हो गया था। . वॉल्टके ने ठीक ही कहा कि एच31बी में मानवता पर ज्ञान के आनंद पर स्पष्ट ध्यान ज्ञान की आत्म-प्रशंसा के चरमोत्कर्ष को प्रस्तुत करता है।

विज्डम की आत्म-प्रशंसा के आरंभ और अंत में मानवता का संदर्भ, वस्तुतः मनुष्य के पुत्र, उसके भाषण के पूरे खंड के चारों ओर एक फ्रेम बनाता है और औपचारिक रूप से संकेत देता है

कि विज्डम की आत्म-प्रशंसा की संपूर्ण सामग्री मनुष्यों के लिए उसके मूल्य को बढ़ावा देने का काम करती है। श्लोक 32 से 36 में मनुष्यों के लिए ज्ञान की अंतिम अपील के लिए एक उपयुक्त परिवर्तन प्रदान किया गया है जहाँ वह अब सीधे मनुष्यों को संबोधित करती है और कहती है और अब मेरे बच्चे मेरी बात सुनते हैं। धन्य हैं वे जो मेरे मार्ग पर चलते हैं और ऐसा ही चलता रहता है। छंद 32 से 36 के व्यावहारिक दृष्टिकोण से वे उस सभी ज्ञान का उपयोग करके ज्ञान की वाणी का चरमोत्कर्ष बनाते हैं, व्यक्तिगत ज्ञान ने अपने बारे में कहा कि वह अपने बच्चों से उसकी बात सुनने की अपील करती है और उसके परिचितों की तलाश करके बुद्धिमान बनने के लिए उसकी आज्ञा का पालन करती है। जब तक कि वे उसे ढूँढ न लें क्योंकि उसे ढूँढने का अर्थ है जीवन पाना और उसे अस्वीकार करने का अर्थ है मृत्यु।

निष्कर्ष का व्यावहारिक उद्देश्य एक स्पष्ट बदलाव की ओर ले जाता है, लेकिन वॉल्टके का आकलन है कि व्यक्तिगत ज्ञान उसके व्यक्तित्व, सेटिंग और पते को बदल देता है और व्याख्यान के मुख्य भाग से निष्कर्ष को लगभग अलग कर देता है और मैं इससे असहमत हूँ। यहाँ वॉल्टके का सारांश है। वह शहर के गेट पर जनता को संबोधित करने वाले मेडियाटिक्स के रूप में अपना भेष बदल लेती है और निर्माता के बगल में एक मौलिक व्यक्ति के रूप में एक घर के मालिक के रूप में अपने बेटों को संबोधित करती है और उन्हें उसे ढूँढने के लिए अपने दरवाजे पर निगरानी बनाए रखने के लिए आमंत्रित करती है। हालाँकि, मेरा विचार है कि यह बदलाव श्लोक 1 से 31 में निमंत्रण जारी करने वाले ज्ञान के संदेश से है जिसमें वह अपनी शिक्षा के मूल्य का वर्णन करती है, श्लोक 4 से 21, आदिकाल से मानवता के परोपकारी बड़े भाई के रूप में अपनी योग्यता के साथ इसके मूल्य का समर्थन करती है। श्लोक 22 से 31, उसके अपने घर लौटने और उन लोगों के लिए सीखने की दावत तैयार करने के लिए जो उसका निमंत्रण स्वीकार करेंगे।

कॉन्टा वॉल्टके, उनके भाषण के पहले भाग का निवर्तमान आंदोलन शुरू से ही अपने ही घर में अपने दर्शकों को मेहमानों के रूप में प्राप्त करने के निमंत्रण में बदलने के लिए डिज़ाइन किया गया था। सच है, ज्ञान अब अपने श्रोताओं को बच्चों के रूप में संबोधित करता है, श्लोक 32 में वस्तुतः पुत्र। श्लोक 4 से 5 में लोगों, मनुष्यों, अपरिपक्व और मूर्खों के अधिक सामान्य संबोधनों के विपरीत। लेकिन यह बदलाव मातृ की विशेषता वाले घनिष्ठ संबंध में से एक है एक श्रोता से दूसरे श्रोता में स्थानांतरित होने के बजाय स्नेह।

जैसा कि वॉल्टके सोचते हैं, विज्डम ने व्याख्यान में खुद को केवल एक आदिम व्यक्ति और आधिकारिक मीडियाटिक्स के रूप में चित्रित नहीं किया, बल्कि मानवता की स्नेही और खुश बड़ी बहन के रूप में भी चित्रित किया। सच है, ज्ञान अब खुद को शहर के विभिन्न गर्म स्थानों के बजाय अपने घर के अंदर पाता है। लेकिन यह बदलाव सक्रिय भर्ती और निमंत्रण से लेकर आतिथ्य सत्कार की ओर है।

खुलेपन से अंदर की ओर देखने वाले परिप्रेक्ष्य में बदलाव के बजाय। हालाँकि, श्लोक 30 में शब्दों के खेल के एक अर्थ के अनुसार, नीतिवचन 8 में व्यक्त ज्ञान स्वयं को मानवता की बड़ी बहन के रूप में चित्रित करता प्रतीत होता है, जो न केवल उसकी भव्य आयु और सर्वोच्च ज्ञान

बल्कि मानवता के प्रति उसके गहरे स्नेह पर भी जोर देता है। वह अब एक मां के रूप में मानवता को संबोधित करती हैं।

इस प्रकार, मनुष्यों के प्रति उसकी भावनाओं को चरमोत्कर्ष पर मातृ प्रेम के रूप में वर्णित किया गया है। नीतिवचन 8.32 पहला और एकमात्र अवसर है जहां व्यक्तिगत ज्ञान, अपने दर्शकों को बच्चों के रूप में संबोधित करके, खुद को मानवता की मां के रूप में पहचानता है। चूँकि अभिव्यक्ति परिभाषा के अनुसार अर्थ में रूपक और आलंकारिक है, इस शब्दांकन का अर्थ यह नहीं है कि विजडम खुद को अपने दर्शकों के साथ वास्तविक रक्त संबंध के रूप में कल्पना करती है।

न ही इस अभिव्यक्ति का अर्थ यह है कि व्यक्तिगत ज्ञान स्वयं को एक आदिम मातृ देवता की भूमिका में डालता है, जैसा कि कुछ लोगों ने तर्क दिया है। बल्कि, तनाव पूरी तरह से मानवता के प्रति उसके स्नेह की ईमानदारी और विश्वसनीयता पर है। यह रूपक का प्रभाव है।

हमें रूपक के साथ ही बने रहने की जरूरत है और इसकी किसी और चीज में व्याख्या करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। एक दिलचस्प सवाल यह है कि क्या यह अपील वास्तव में माता-पिता की शिक्षा के अनुरूप व्यक्तिगत ज्ञान लाती है। वाल्टके ने तर्क दिया कि पिता के पिछले व्याख्यान के साथ एक अंतर्पाठीय संबंध है।

वह कहते हैं, उसके प्रारंभिक शब्द, तो अब बेटों, मेरी बात सुनो, और उसका अंतिम शब्द, मृत्यु, अध्याय 7 में पिछले भाषण में पिता के निष्कर्ष से सटीक रूप से मेल खाता है। इससे उन्हें बाद के ज्ञान की अपनी लगातार पहचान की पुष्टि करने के लिए प्रेरित किया गया। पिता की शिक्षा. उद्धरण, अध्याय 7 और 8 की दो महान युग्मित कविताओं के बीच यह सटीक अंतर्पाठीयता इस बात की पुष्टि करती है कि महिला बुद्धि ऋषि और उनकी शिक्षा का प्रतिनिधित्व करती है। अंत उद्धरण.

वॉल्टके की राय में, स्त्री ज्ञान और ऋषि को सुनना एक ही बात है। अन्य टिप्पणियाँ वाल्टके के तर्क को और अधिक वजन देती हैं। सबसे पहले, 8.32 में व्यक्त ज्ञान की अपील उसके प्रारंभिक शब्दों का गठन नहीं करती है, बल्कि उसके भाषण के समापन खंड के पहले शब्दों का गठन करती है, जो दो आसन्न पाठों के बीच समानता को बढ़ाती है क्योंकि समानताएं उनके संबंधित संदर्भों में समान स्थिति में स्थित हैं।

दूसरा, बेटों के रूप में मानवता के लिए मानवीय ज्ञान की अपील लाक्षणिक रूप से माता-पिता के रूप में ज्ञान की स्थिति को दर्शाती है, भले ही पिता नहीं, जो शायद समान रूप से रूपक रूप से ज्ञान परंपरा को व्यक्त करता है, और बुद्धिमानों की शिक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता है। लेकिन माँ, जिसकी शिक्षा पुस्तक के दर्शकों को एकवचन और बहुवचन दोनों में दी जाती है, का पालन करना होता है। वाल्टके का सुझाव है कि ज्ञान की अपील जिसे उनके दर्शकों को सुनना चाहिए, संभवतः अध्याय 10-31 में नीतिवचन और कहावतों के निम्नलिखित संग्रह को संदर्भित करता है क्योंकि ज्ञान ने तत्काल संदर्भ में कोई दंडात्मक शब्द नहीं दिया है, अनावश्यक रूप से शाब्दिक

है, खासकर जब से नीतिवचन 9 में पूरा अध्याय बीच में हस्तक्षेप करता है यहां उनका भाषण और वे अन्य संग्रह।

अधिक संभावना है, सुनने की अपील संपूर्ण ज्ञान के भाषण को संदर्भित करती है और शायद नीतिवचन 1-9 की संपूर्णता को संदर्भित करती है और शायद संपूर्ण ज्ञान परंपरा को न केवल इस पुस्तक में बल्कि बड़े पैमाने पर इज़राइल की ज्ञान परंपरा में दर्शाया गया है। अंततः, अध्याय 8, श्लोक 34 में अपेक्षित देखने के रूपक का क्या महत्व है? धन्य है वह जो मेरी सुनता है, और प्रतिदिन मेरे द्वारों पर दृष्टि रखता है, और मेरे द्वारों पर बाट जोहता है। यह केवल एक विशिष्ट स्थान के रूप में सुनने के आदेश को तीव्र नहीं करता है जहां ज्ञान के श्रोताओं को ध्यान से देखना है, अर्थात् ज्ञान के द्वार और दरवाजे दिए गए हैं।

बेटे किस चीज़ का इंतज़ार कर रहे हैं, इसके बारे में विभिन्न स्पष्टीकरण पेश किए गए हैं। रॉयल मालकिन के निर्देश, सामान्य रूप से प्रवेश, या ज्ञान के प्रेमी के रूप में प्रवेश का पक्षधर है। हालाँकि, ऐसा लगता है कि कोई भी भाषण जिसमें विशिष्ट पहचान अत्यधिक समस्याग्रस्त है और विभिन्न रूपकों पर बोझ डालती है।

उदाहरण के लिए, व्यक्तिगत ज्ञान का विचार कई पुरुष प्रेमी को अंततः पहुंच के एक अंतर्निहित वादे के साथ प्रोत्साहित करना खुले तौर पर वेश्यावृत्ति या बहुत कम से कम, सांस्कृतिक रूप से अनुचित यौन व्यवहार का खुला प्रदर्शन होगा, जो वर्तमान संदर्भ में स्पष्ट रूप से अनपेक्षित है। अधिक संभावना है, रूपक को कायम रखने की जरूरत है और इसे गद्य व्याख्या में विघटित नहीं किया जाना चाहिए। रूपक अगले अध्याय, अध्याय नौ में आगे बढ़ता है, और व्यक्तिगत ज्ञान के भोज निमंत्रण के संदर्भ में ज्ञान के महल में प्रवेश की परिकल्पना करता है, जो अध्याय नौ में जारी किया गया है।

मुझे लगता है कि हम एक बार फिर यहां थोड़ी देर के लिए रुकेंगे। अब हम अध्याय नौ की ओर मुड़ते हैं, नीतिवचन अध्याय नौ। विशेषकर श्लोक एक से छः तक, परन्तु फिर ग्यारह से बारह तक श्लोक भी।

पहली नज़र में, नीतिवचन 9 तीन खंडों में बंटा हुआ प्रतीत होता है। महिला ज्ञान पर श्लोक एक से छह, श्लोक सात से बारह मानक ज्ञान निर्देश हैं, और फिर महिला मूर्खता पर श्लोक तेरह से अठारह। छंद सात से दस और बारह एक ओर महिला ज्ञान और दूसरी ओर महिला मूर्खता के दो व्यक्तित्वों की तुलना को अजीब तरीके से बाधित करते प्रतीत होते हैं, जिससे कई लोग उन्हें द्वितीयक सम्मिलन के रूप में देखते हैं।

फिर भी अपनी वर्तमान स्थिति में इसका एक महत्वपूर्ण कार्य हो सकता है। सबसे पहले, छंद सात से बारह में सामग्री चेतावनी और कहावतों के संयोजन के साथ नीतिवचन एक से नौ में निर्देशात्मक सामग्री और निम्नलिखित संग्रह में मुख्य रूप से लौकिक सामग्री, नीतिवचन दस से इकतीस के समान है। दूसरा, जबकि श्लोक सात से दस और बारह एक बुद्धिमान शिक्षक के लिए सामान्य सलाह और ज्ञान के मूल्य पर एक उद्घोषणा प्रतीत होते हैं, श्लोक ग्यारह स्पष्ट रूप

से विचार को जारी रखता है और इस प्रकार श्लोक एक से छह तक के ज्ञान का मानवीकरण करता है।

नीतिवचन एक से नौ तक संग्रह के अंत में रखा गया, यह खंड प्रत्येक के प्रमुख साहित्यिक रूपों को जोड़कर व्यक्तिगत नीतिवचन के निम्नलिखित संग्रह के साथ खुली किताब के शुरुआती संग्रह की परिचयात्मक सामग्री को जोड़ने का काम करता है। श्लोक ग्यारह इस प्रकार नीतिवचन सामग्री को नीतिवचन दस एक से बाईस सोलह और उसके बाद की सामग्री को व्यक्तिगत ज्ञान की शिक्षा का हिस्सा बनाता है। निर्देश और नीतिवचन संग्रह, चेतावनी और लौकिक वाक्य एक साथ मिलकर मानवीकृत ज्ञान का प्रतिनिधित्व करते हैं।

वॉल्टके नीतिवचन नौ के इस संक्रमणकालीन कार्य को स्पष्टता से समझाते हैं, जटिल रूपक के कुछ अलंकारिक प्रभाव को सामने लाते हैं। मैं उद्धृत करता हूँ, अपना घर बनाने और उसके भोज की तैयारी करने के रूप में ज्ञान का प्रतिनिधित्व आलंकारिक रूप से क्रमशः प्रस्तावना, अध्याय एक से नौ, और संग्रह, अध्याय दस से इकतीस का प्रतिनिधित्व कर सकता है। घर, जो प्रारंभिक प्रस्तावना है, अब समाप्त हो गया है, और भोज, जो निम्नलिखित अध्यायों में सुलैमान की नीतिवचन है, शुरू होने वाला है।

उसके दूत, अर्थात् माता-पिता, अप्रतिबद्ध और सुस्त युवाओं को उसके शानदार भोजन को खाने और पीने के लिए आमंत्रित करने के लिए भेजे गए हैं। उनके बेटे पहले से ही ज्ञान के द्वार खुलने का इंतज़ार कर रहे हैं। अंत उद्धरण.

निःसंदेह, वाल्टके का कल्पनाशील पढ़ना ही एकमात्र संभावित पाठन नहीं है। रेमंड वैन लीउवेन ने हाल ही में ज्ञान के घर, इज़राइली मंदिर और यहां तक कि ब्रह्मांड के बीच संबंध दिखाया है। उनकी अंतर्दृष्टि पर निर्माण करना और इसे ज्ञान रूपक की कल्पनाशील क्षमता की हमारी खोज के साथ जोड़ना, एक ऐसा पाठ जो वॉल्टके का पूरक है, स्वयं सुझाव देता है।

वास्तव में ज्ञान के घर के विचार की एक पौराणिक पृष्ठभूमि भी हो सकती है। असीरो - बेबीलोनियन अप्सू के बाद से, भूमिगत मीठे पानी को ज्ञान के घर के रूप में नामित किया गया है। चूँकि यह भगवान ईए, एन्की का क्षेत्र है, जिसका एक विशेषण बुद्धि का भगवान है, यह वास्तव में संभव प्रतीत होता है।

फ़ॉक्स और वाल्टके ने तर्क दिया कि इस पौराणिक पृष्ठभूमि का मिथकीकरण कर दिया गया है, और यह सही प्रतीत होता है। हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं है कि पौराणिक पृष्ठभूमि की उपेक्षा की जा सकती है या की जानी चाहिए। बल्कि, पौराणिक कथाओं के जानबूझकर किए गए संकेत, यहां तक कि अपने स्वच्छ रूप में, के दो शक्तिशाली अलंकारिक प्रभाव हैं, जिनमें से पहला लगभग निश्चित रूप से इरादा था।

सबसे पहले, पौराणिक संकेत ने ज्ञान के चित्रण में रहस्य और अलौकिक स्वभाव की भावना जोड़ दी है। अपरिहार्य प्रश्न उठता है कि क्या व्यक्तिगत ज्ञान भाषण के एक अलंकार से अधिक है, क्या वास्तविक दुनिया में उसका वास्तव में एक व्यक्तिगत, शायद अलौकिक अस्तित्व हो सकता है।

युगों-युगों से पाठकों ने इस आलंकारिक निमंत्रण पर उत्सुकता से प्रतिक्रिया दी है, जैसा कि व्यक्तिगत ज्ञान के स्वागत का इतिहास स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है।

दूसरा, ज्ञान के चित्रण में पौराणिक कथाओं के इस और अन्य निशानों ने कई आधुनिक विद्वानों को मानवकृत ज्ञान में विभिन्न प्राचीन निकट पूर्वी देवताओं के पवित्र मूल तत्वों की पहचान करने के लिए प्रेरित किया है। ऐसी विद्वत्तापूर्ण धारणाएँ आम तौर पर भ्रामक हैं। हालाँकि, सबसे पहले यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि पौराणिक पूर्ववर्तियों के लिए परिस्थितिजन्य साक्ष्य के विभिन्न टुकड़े विभिन्न भौगोलिक स्थानों और समय की विभिन्न अवधियों से विभिन्न प्रकार की समानता वाले विभिन्न देवताओं का संकेत देते हैं।

ऐसा कोई एक देवता नहीं है जो सभी या अधिकांश पौराणिक संकेतों पर फिट बैठता हो। मेरे विचार में, इससे पता चलता है कि ज्ञान के चित्रण में पौराणिक सामग्री का उद्देश्य यह इंगित करना नहीं है कि मानवीकृत ज्ञान इस या उस अन्य देवता के समान है या है। जिन लोगों ने मानवीकृत ज्ञान के पीछे प्राचीन निकट पूर्वी देवी-देवताओं को खोजने का बीड़ा उठाया है, उन्होंने इस तरह से प्रतिक्रिया दी है जो नीतिवचन 1-9 के लेखकों द्वारा अनपेक्षित था, जो कल्पना के कल्पनाशील प्रभाव की सराहना करने में विफल रहा।

फिर, खतरा यह था और कई लोग जिस जाल में फंस गए हैं, वह रूपक को विकृत करना है। इससे यह भी पता चलता है कि पौराणिक संकेतक लापरवाह समन्वयकर्ताओं द्वारा अनजाने में छोड़े गए निशान नहीं हैं। बल्कि, पौराणिक सामग्री पाठक को संकेत देने वाले जानबूझकर संकेत हैं कि व्यक्तिगत ज्ञान आलंकारिक दृष्टि से कहीं अधिक है।

इस व्याख्यान के शेष भाग में, मैं अब अध्याय 9 में छंद 1, 2, और 3 की कुछ और विस्तृत व्याख्याओं, कल्पनाशील व्याख्याओं में संलग्न होना चाहता हूँ, और फिर हम इस व्याख्यान को समाप्त कर देंगे। श्लोक 1. विद्वान आम तौर पर अध्याय 9-1 में ज्ञान के घर के निर्माण और नीतिवचन 14-1 और नीतिवचन 24-3 में समान कथनों के बीच समानता पर ध्यान देते हैं। इस बात पर जीवंत बहस चल रही है कि क्या 9-1बी में पाठ को पढ़ा जाना चाहिए क्योंकि उसने अपने सात स्तंभ खुदवाए हैं या क्या इसे पढ़ना चाहिए क्योंकि उसने अपने सात स्तंभ खड़े किए हैं।

हमारे उद्देश्यों के लिए, इस दुविधा का समाधान सारहीन है। हालाँकि, जो महत्वपूर्ण है, वह वास्तुशिल्प चित्रण है, जो इंगित करता है कि उसकी तैयारी में व्यक्तिगत ज्ञान ने एक विशाल वास्तुशिल्प संरचना खड़ी की है। वाल्टके ने ठीक ही कहा है कि निर्मित क्रिया एक विशेष प्रकार की शिल्प कौशल के माध्यम से किसी चीज़ को अस्तित्व में लाने की प्रक्रिया को दर्शाती है।

और अध्याय 8 के श्लोक 30 और 31 में ओमान के अर्थ के बारे में हमारी चर्चा को याद रखें। अधिक सटीक रूप से कहें तो, बुद्धि को एक वास्तुकार के रूप में चित्रित किया गया है। और यह चित्रण प्लेटो के डेमियर्ज, शिल्पकार निर्माता, और फिलो के ज्ञान पर उनके कुछ लेखों में शहर-नियोजन वास्तुकार की उस छवि के विकास के साथ अच्छी तरह मेल खाता है। नीतिवचन 9 में खाने-पीने के माध्यम से निर्माण, वध, निमंत्रण और दावत का क्रम एक और विचारोत्तेजक पाठ्य रत्न है।

चूँकि कई प्राचीन और हाल के ग्रंथ इमारतों के समर्पण को भव्य दावत के साथ जोड़ते हैं, जो सदियों से दुनिया भर में सर्वव्यापी प्रथा है, व्यक्तिगत ज्ञान के निमंत्रण को एक घर के समर्पण के अवसर पर जारी किए जाने के रूप में चित्रित किया गया है, शायद नीतिवचन 1 का पूरा होना। 9. यह विवरण कि विजडम हाउस में सात स्तंभ हैं, समान रूप से विचारोत्तेजक है और इसने प्राचीन और आधुनिक टिप्पणीकारों की कल्पना को प्रेरित किया है। नीतिवचन 9 की साहित्यिक कथा में, संख्या सात पूर्णता का प्रतीक है। कम से कम, इससे पता चलता है कि विजडम का घर एक भव्य इमारत है, जो उसकी प्रमुख मकान मालकिन और उसके द्वारा अपेक्षित कई मेहमानों के लिए उपयुक्त है।

फॉक्स, अपने समग्र दृष्टिकोण के अनुरूप जो मूल अर्थ पर केंद्रित है, विवरण में विवरण को कम कर देता है। उद्धरण, दृश्य का विवरण व्यक्तिगत रूप से महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन साथ में वे दिखाते हैं कि ज्ञान के पास देने के लिए बहुत कुछ है और वह ऐसा करने के लिए उत्सुक है। ज्ञान को सुनना, उसके घर के भीतर रहना, और उसके भोजन और शराब का सेवन करना जीवन भर सीखने की कल्पना करने के विभिन्न तरीके हैं।

अंत उद्धरण. उन्होंने चित्रण के मूल रूप से अपेक्षित अलंकारिक कार्य के कम से कम प्राथमिक उद्देश्य को अच्छी तरह से पकड़ लिया। व्यक्तिगत ज्ञान की उदारता और भोज कल्पना, आवास और दावत का व्यावहारिक महत्व, सीखने के बराबर है।

हालाँकि, फिर भी, एक गद्य व्याख्या वास्तविक चीज़ का एक फीका विकल्प है। और वॉल्टके और फॉक्स दोनों की कल्पना के प्रतीकात्मक अर्थ की न्यूनतम व्याख्या अंतिम विश्लेषण में न्यूनतावादी है। इसे युगों-युगों से कई प्रतीकात्मक व्याख्याओं के फॉक्स के मूल्यांकन में सबसे स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

उन्होंने संख्या सात के प्रतीकात्मक पाठों की एक दिलचस्प सूची तैयार की। अंत उद्धरण. पहचान में निर्माता को समझने के सात साधन शामिल हैं।

यह रिकम है। नीतिवचन के पहले सात अध्याय, हिज़िग, जो तर्क देते हैं कि वे सात लिखित स्तंभों में अंकित थे। फिर सात एंटीडिलुवियन ऋषि या बेबीलोनियन पौराणिक कथाओं के अपकल्लु, इसलिए ग्रीनफ़ील्ड।

या मिड्रैश नीतिवचन के अनुसार, सात आकाशमंडल या सात भूमियाँ। या सात ग्रह या सृष्टि के सात दिन। और फिर चर्च के सात संस्कार या पवित्र आत्मा के गुणों के सात उपहार, इसलिए डेलिज़स्च।

या सात शाब्दिक कलाएँ। इन रीडिंग पर फॉक्स का फैसला शिक्षाप्रद है। उद्धरण, ऐसे सभी डिकोडिंग मनमाने हैं और संदर्भ द्वारा समर्थित नहीं हैं।

अंत उद्धरण. वाल्टके, हाल की छात्रवृत्ति में विभिन्न फैसी प्रस्तावों सहित, इनमें से कई और कई अन्य दिलचस्प व्याख्याओं को सूचीबद्ध करते हुए, एक समान निष्कर्ष पर पहुंचे। उद्धरण, ये सभी व्याख्याएँ व्याख्यात्मक हैं, व्याख्यात्मक नहीं।

अंत उद्धरण. व्याख्याओं के इस लघु-सर्वेक्षण से प्राप्त धारणा सभी के लिए निःशुल्क व्याख्या की है, जिसमें सात के समूहों में आने वाली किसी भी चीज़ को ज्ञान के घर के स्तंभों के रूप में पहचाना जा सकता है। हालाँकि, इन व्याख्याओं की हमारी गणना का उद्देश्य उच्च स्तर की कल्पना को दिखाना है जो कि कल्पना से उत्पन्न हुई है, भले ही इसमें से अधिकांश काल्पनिक है।

पहचान वास्तव में काफी हद तक मनमानी और अक्सर फैंसी होती है, लेकिन फॉक्स और वॉल्टके के खिलाफ, मेरा मानना है कि वे संदर्भ से पूरी तरह से असमर्थित नहीं हैं, क्योंकि संख्या सात का उल्लेख दो पुरे अध्यायों के संदर्भ में दिखाई देता है जो आलंकारिक और प्रतीकात्मक हैं। भाषा। हमने पहले फॉक्स की टिप्पणी उद्धृत की थी कि दृश्य का विवरण व्यक्तिगत रूप से महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन सवाल उठाया जाना चाहिए। उद्धरण, यदि यह विवरण कि सात स्तंभ हैं, महत्वपूर्ण नहीं है, तो पहले स्थान पर संख्या क्यों निर्दिष्ट करें, और इतनी अत्यधिक प्रतीकात्मक संख्या क्यों चुनें? निश्चित रूप से एक बयान, जैसे कि, उसने कई स्तंभों को गढ़ा है या स्थापित किया है, या तीन से अधिक किसी अन्य संख्या को स्थापित किया है, ने वांछित प्रभाव प्राप्त किया होगा यदि एकमात्र उद्देश्य यह संकेत देना था कि व्यक्तिगत बुद्धि का घर बड़ा था।

इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि युगों से व्याख्याकारों को व्यापक संदर्भ और संख्या सात की विशिष्टता से बुद्धि के सात स्तंभों के संदर्भ में छिपे महत्व की तलाश करने के लिए प्रेरित किया गया था, जैसा कि विद्वान आज भी करते हैं। अब मैं श्लोक दो की ओर बढ़ता हूँ। श्लोक दो में वध का तात्पर्य संभवतः धार्मिक बलिदानों के बजाय सामान्य रूप से मांस व्यंजन तैयार करने से है।

दिलचस्प बात यह है कि श्लोक एक में निर्माण कार्य और पारंपरिक रूप से वध करना दोनों ही पुरुषों की गतिविधियाँ थीं। तैयारियों का वर्णन, विशेष रूप से विशेष रूप से मिश्रित शराब का उल्लेख, एक भव्य और आनंदमय दावत की प्रत्याशा को उजागर करता है, जो अध्याय में बाद में मानवीय मूर्खता द्वारा पेश किए गए तुलनात्मक रूप से कम राशन के विपरीत है, जहां हमें केवल पानी और भोजन मिलता है। वॉल्टके का सुझाव है कि विज्डम द्वारा अपना तालिका उद्धरण तैयार करने का संदर्भ यह दर्शाता है कि सुलैमान की कहावतें उन लोगों के आनंद के लिए सबसे अधिक व्यवस्थित की गई हैं जो उनका अध्ययन करते हैं, अंत उद्धरण, पूरे अध्याय में विभिन्न व्यक्तिगत रूपकों की सुसंगत तरीके से व्याख्या करने का लाभ है जो व्यवहार करता है मानवीकरण के एक जटिल वैचारिक रूपक के भाग के रूप में बुद्धि के मानवीकरण से जुड़े विभिन्न रूपक।

इसमें संदर्भ से समर्थन मिलने का भी लाभ है। फिर भी, वॉल्टके की दावत की पहचान अकेले वास्तविक लौकिक संग्रहों से करना बहुत विशिष्ट लगता है। चूँकि विज्डम के भोज में दिए जाने वाले भव्य प्रावधान स्पष्ट रूप से विज्डम की शिक्षाओं की सामग्री को संदर्भित करते हैं, उनके द्वारा प्रदान किए जाने वाले शानदार पार्टी भोजन में समग्र रूप से शिक्षाओं और कहावतों की सामग्री शामिल होती है, जिसमें अध्याय एक से नौ के साथ-साथ कोई अन्य प्रामाणिक शिक्षा भी शामिल होती है। और चरित्र गुण जो बुद्धि का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसमें दोनों लिंगों के बुद्धिमान माता-पिता की शिक्षा, और सामान्य रूप से संतों की शिक्षा शामिल है, चाहे वह परिवार

या गांव के बुजुर्गों से हो, या चाहे वह अधिक पेशेवर संतों से हो जिन्होंने सेवा की हो शाही दरबार सहित सार्वजनिक जीवन के विभिन्न केन्द्रों में सलाहकार।

वैसे, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि बाद के ईसाई लेखकों ने यहां लगातार यूचरिस्ट, प्रभु भोज का संदर्भ देखा। दिलचस्प बात यह है कि एम्ब्रोस प्लेटो के सिम्पोज़िया में भी समानता देखते हैं। उद्धरण, प्लेटो ने निर्णय लिया कि इस कटोरे पर प्रवचन को उसकी पुस्तकों में कॉपी किया जाना चाहिए।

उसने आत्माओं को पीने के लिए बुलाया, परन्तु नहीं जानता था कि उन्हें कैसे तृप्त किया जाए, क्योंकि उसने विश्वास का नहीं, बल्कि अविश्वास का पेय प्रदान किया। अंत उद्धरण. अगर मैं इसे सही ढंग से समझता हूं, तो एम्ब्रोस सुझाव दे रहा है कि प्लेटो के दार्शनिक संवादों में सिम्पोसिया की प्रथा लेडी विजडम के भोज से नकल की गई थी।

अब मैं श्लोक तीन की ओर मुड़ता हूँ। वाल्टके और अन्य लोग इस सवाल से जूझ रहे थे कि क्या प्राचीन निकट पूर्वी संस्कृति में पुरुष मेहमानों को आमंत्रित करने के लिए महिला नौकरों को भेजने के बजाय एक महिला मेजबान के लिए खुद जाना उचित था। वाल्टके के बाद मीनहोल्ड ने 1400 ईसा पूर्व के आसपास राजा केरेट की उगारिटिक किंवदंती की ओर इशारा किया, जिसमें राजा अपनी पत्नी को भोजन तैयार करने और अपने मेहमानों को आमंत्रित करने का निर्देश देता है।

रानी निम्नलिखित शब्दों के साथ अपना कार्य पूरा होने की सूचना देती है। बोली, खाने के लिए, पीने के लिए मैंने तुम्हें बुलाया है। तुम्हारे स्वामी केरेट का बलिदान है।

अंत उद्धरण. वाल्टके ने निष्कर्ष निकाला, यहां तक कि एक रानी भी बाहर जा सकती है और पुरुषों को पूरी सुंदरता के साथ दावत पर आमंत्रित कर सकती है। अंत उद्धरण.

मेरी राय में, समस्या केवल इसलिए उत्पन्न होती है क्योंकि कथात्मक रूपक को अब फिर से शाब्दिक रूप से लिया जाता है। हालाँकि, विजडम नाम की कोई वास्तविक महिला नहीं थी जो शहर के चारों ओर अपना माल रोती हो। वहाँ कोई वास्तविक नौकर लड़कियाँ नहीं थीं जो भावी मेहमानों के पास आती थीं।

बल्कि, व्यक्तिगत ज्ञान की सार्वजनिक अपील सामान्य अपील प्रस्तुत करती है, जो अपने बुद्धिमान सदस्यों के माध्यम से पूरे समाज में व्याप्त होती है। युवाओं के लिए समाज के उच्चतम मूल्यों को सीखना और अपनाना। नौकर लड़कियाँ समाज में उन सभी का प्रतिनिधित्व करती हैं जो युवा पीढ़ी को समाज के उच्चतम विचारों और मूल्यों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने में सक्रिय रुचि लेती हैं, जैसा कि व्यक्तिगत ज्ञान द्वारा दर्शाया गया है और प्राचीन इज़राइली समाज में इन मूल्यों के व्यापार के माध्यम से सिखाया जाता है।

नीतिवचन के एक अन्य टिप्पणीकार विलियम मैककेन ने इस पहचान से इनकार किया। उद्धरण, चूंकि ये, ऋषि, न तो युवा हैं और न ही महिला हैं। अंत उद्धरण.

वाल्के ने उचित रूप से उसे दंडित किया, उद्धरण दिया, यह मांग करते हुए कि सादृश्य सभी चार पैरों पर चलता है। अंत उद्धरण. लेकिन वाल्के का फैसला उन सभी पर लागू होता है जो कथा रूपक को वास्तविक दुनिया में एक संदर्भात्मक परिदृश्य में विघटित करते हैं जिसमें विस्तारित रूपक के सभी विवरणों को एक उपयुक्त वास्तविक समकक्ष मिलना चाहिए, जिसमें स्वयं वाल्के की कुछ व्याख्याएं भी शामिल हैं।

वाल्के की टिप्पणी जो ज्ञान का प्रतीक है, शिक्षकों को ज्ञान के साथ निकटतम संभव निकटता और अंतरंगता का आनंद लेने के लिए पुरुष नौकरों को नहीं, बल्कि महिलाओं को भेजती है, अंतिम उद्धरण, एक अनुमानित, गैर-मौजूद के बजाय इसके अलंकारिक प्रभाव के लिए रूपक की सही व्याख्या करता है। वास्तविक घटना. यह कुछ हद तक सही हो सकता है, लेकिन शायद और भी कुछ है, जैसा कि मैं विलियम मैककेन की एक टिप्पणी की मदद से प्रदर्शित करना चाहता हूँ। मेरी राय में, मैककेन ने ग़लती से कहा कि नीतिवचन 9, 1-6 में पूरा दृश्य नीतिवचन 7, 10-12 में उस अजीब महिला के मॉडल पर बनाया गया है, जिसे मैककेन ने एक वेश्या के रूप में पहचाना था।

इस प्रकार, मानवीकृत ज्ञान को प्रेम की देवी के काल्पनिक विरोधाभास के रूप में चित्रित किया गया है, और देवी एस्टेट और उनके भक्तों से जुड़े उद्देश्यों को ज्ञान और उनकी नौकर लड़कियों में स्थानांतरित कर दिया गया है। मुझे नहीं लगता कि बाइबिल के किसी भी ज्ञान ग्रंथ में चित्रित व्यक्तिगत ज्ञान के पीछे कोई वास्तविक या विशिष्ट देवी निहित है। हालाँकि, यह संभव है कि रूपक ने अलंकारिक कारणों से जानबूझकर पारंपरिक देवताओं की विभिन्न विशेषताओं को आकर्षित किया हो।

उनके चित्रण में युवा पुरुषों का ध्यान आकर्षित करने के लिए रहस्यमय, लगभग दिव्य, और इस प्रकार आकर्षक और आकर्षक रोशनी में व्यक्तिगत ज्ञान को चित्रित करने के लिए महिला देवताओं की याद दिलाने वाले सूक्ष्म संकेत शामिल हैं। यदि यह मामला है, तो उसकी नौकर लड़कियाँ वास्तव में वास्तविक महिलाओं का प्रतीक हो सकती हैं। हालाँकि, ये महिलाएँ पंथ भक्त या महिला देवता नहीं हैं, बल्कि पारंपरिक इज़राइली समाज में अच्छी तरह से सम्मानित परिवारों से संबंधित युवा महिलाओं की एक आदर्श तस्वीर का प्रतीक हैं, जिन्हें उन मूल्यों के अनुसार लाया गया होगा जो मानव ज्ञान का प्रतिनिधित्व करते हैं और इस प्रकार हैं उसकी नौकर लड़कियाँ।

दूसरे शब्दों में, जो युवा पुरुष व्यक्तिगत ज्ञान के निमंत्रण का पालन करते हैं, वे उसके रूपक घर में युवा योग्य महिलाओं का सामना करेंगे जो ज्ञान के मूल्यों को धारण करते हैं। या, इसे अलग ढंग से कहें तो, फिर भी, प्रतिष्ठित चरित्र की युवा महिलाएँ उन युवाओं के प्रति आकर्षित होंगी जो बुद्धि के मूल्यों को धारण करते हैं। नतीजतन, जो युवा पुरुष बुद्धिमान महिलाओं से शादी करना चाहते हैं, नीतिवचन 31, 10-31 में जिस प्रकार की महिलाओं को दर्शाया गया है, उन्हें खुद को उन महिलाओं के योग्य साबित करने की आवश्यकता है जो वे चाहते हैं।

और खुद को योग्य साबित करने का तरीका सीखने और बुद्धिमान बनने के लिए ज्ञान के निमंत्रण का पालन करना है। इस अर्थ में, बुद्धिमान लड़कियाँ बुद्धि की सेवक लड़कियाँ होती हैं जो अपरिपक्व युवकों को आमंत्रित करती हैं।

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. नट हेन हैं। यह सत्र 7, रूपक और वैयक्तिकृत बुद्धि, भाग 2 है।